अप्रैल 2019

दादावाणी

Retail Price ₹ 10

हम मेहनत करें,
चारों ओर देखते रहें
फिर भी कुछ नहीं मिलता,
तो हमें समझ जाना चाहिए कि
अपने संयोग ठीक नहीं हैं।
बल्कि अब वहाँ ज़्यादा
ज़ोर लगाएँगे तो नुकसान
होगा उसके बजाय
हमें आत्मा का कुछ
कर लेना चाहिए।

वर्ष : 14 अंक : 6
अखंड क्रमांक : 162
अप्रैल 2019
Total 36 pages (including cover)

Editor : Dimple Mehta
© 2019
Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

'नुकसान' के समय समाधानकारी समझ

संपादकीय

जीवन में संयोगों का प्रवाह एक समान नहीं रहता। जीवन में शारीरिक, सामाजिक और आर्थिक संयोग बदलते ही रहते हैं। जब आर्थिक संयोग अच्छे होते हैं तब इंसान खुश हो जाता है और जब संयोग बदल जाते हैं तब दु:खी हो जाता है।

परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) कहते हैं कि जैसे दिन के बाद रात आती है और रात के बाद वापस दिन आता है, उसी प्रकार संयोगों में बदलाव तो होते ही रहते हैं। कई बार इंसान अपने लोभ की वजह से ही दु:खी होता रहता है। ऐसे समय में तो, इतना ही देख लेना चाहिए कि कल खाने के पैसे हैं या नहीं, इससे ज़्यादा नहीं देखना। यदि पैसे न हों, तब भी वाइफ, परिवारजन तो हैं न! और हाथ, पैर, आँखें वगैरह पूँजी तो है ही न! ऐसा समझकर संतोष रखना है।

अपने पास क्या बचा है, उसे देखो, जो चला गया उसे नहीं देखना। समझदार तो जो बचा है, उसे देखकर आनंद में ही रहता है। जबकि लोग फायदे का आंनद तो नहीं लेते और नुकसान का ही रोना रोते रहते हैं। अर्थात् पैसे हों तब भी दु:ख और न हो तब भी दु:ख। सभी दु:खी, उसका कारण तो सिर्फ नासमझी ही है। वास्तव में देखने जाएँ तो, लोगों को खाने-पीने की कमी नहीं है पर समझ की ही कमी है।

लोग तो डॉक्टर होकर शेयर बाज़ार में पैसें लगाते हैं, फिर नुकसान हो जाए तो, और ज़्यादा पैसे लगाकर शेयर बाज़ार से ही कमाने में जुट जाते हैं और फिर ज़्यादा नुकसान को निमंत्रण देते हैं। वास्तव में डॉक्टर को, डॉक्टर की लाइन में ही कमाई होगी इसलिए डॉक्टर को शेयर बाज़ार बंद करके डॉक्टर की लाइन में ही आगे बढ़ना चाहिए, दूसरे काम-धंधे में नहीं पड़ना चाहिए।

फायदा-नुकसान पुण्य-पाप के अधीन है। जब पुण्य का उदय होता है तब फायदा होता है और पाप का उदय होता है तब नुकसान होता है। यानी कि फायदे-नुकसान दोनों किस्मत में लिखे हुए हैं। जिस प्रकार नहीं सोचने पर भी नुकसान होता है। उसी प्रकार फायदा भी बगैर सोचे होगा। लेकिन लोग *पूरण-गलन* में आर्तध्यान व रौद्रध्यान करके जन्म बिगाड़ रहे हैं। जबकि लक्ष्मी तो जितनी आनी है उतनी ही आएगी। अत: बाहर की पूँजी के बजाय अंदर की पूँजी को संभालना चाहिए।

दादाश्री का भी कॉन्ट्रैक्ट का बिज़नेस था। अत: फायदे-नुकसान तो होता ही रहता था न! लेकिन ऐसे संयोगों में वे खुद किस प्रकार की समझ सेट करके चिंता व *उपाधि* रहित रहे, उन्होंने उसका खुलासा किया है, उन्होंने अपने ही अनुभव की बातें की हैं, जो हमें अपने जीवन में भी उपयोगी सिद्ध होगी।

प्रस्तुत अंक में दादाश्री द्वारा आर्थिक समस्या के समय किस समझ को सेट करें, उसके लिए दी गई इन सुंदर चाबियों का संकलन हुआ है। जो हमें चिंता-*उपाधि* रहित बनाकर मोक्षमार्ग में प्रगति करवाएँगी, यही दिल से अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

'नुकसान' के समय समाधानकारी समझ

सिर्फ, मान्यता का ही दु:ख है

प्रश्नकर्ता : दादा, अभी हमारे आर्थिक संयोग बदल गए हैं तो अब क्या करेंगे, ऐसा होता रहता है। आप कुछ उपाय बताइये?

दादाश्री : वे तो बदलते रहेंगे। जैसे दिन के बाद रात आती है न? आज नौकरी न हो लेकिन कल नई मिल जाएगी। वह तो दोनों बदलते रहते हैं। कई बार तो आर्थिक कारण होते ही नहीं हैं लेकिन उसमें लोभ जागता है। कल के लिए सब्ज़ी के पैसे हैं या नहीं, बस इतना ही देख लेना। इससे ज़्यादा देखने की ज़रूरत नहीं है। अब बोलो, क्या तुम्हें ऐसा दु:ख है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तो फिर उसे दु:ख कहेंगे ही कैसे? ये तो बिना दु:ख के दु:ख का रोना रोते रहते हैं तब फिर उससे हार्ट अटैक आता है, *अजंपा* (बेचैनी, अशांति) रहता है और उसे खुद दु:ख मानता है। जिसका उपाय नहीं है, उसे दु:ख कह ही नहीं सकते। जिनके उपाय हैं, उनके उपाय तो करने चाहिए लेकिन जिनके उपाय ही न हैं, तो वे दु:ख है ही नहीं।

जो गया उसे मत देखना, क्या बचा है उसे देखो

इंसान को क्या दु:ख है? एक व्यक्ति मुझ से कहने लगा कि 'मेरे बैंक (अकाउन्ट) में कुछ नहीं है। एकदम खाली हो गया है, दिवालिया हो गया हूँ। मैंने पूछा, 'कर्ज़ कितना था?' तब कहने लगा, 'कर्ज़ नहीं था।' तो उसे दिवालिया नहीं कहेंगे। बैंक में हज़ार-दो हज़ार रुपए हैं। फिर मैंने कहा, 'वाइफ तो है न?' तब कहने लगा, 'क्या वाइफ को बेच सकते हैं?' मैंने कहा, 'नहीं, लेकिन तेरी दो आँखें हैं न, क्या उन्हें दो लाख में बेचनी हैं?' ये आँखें, ये हाथ, पैर, दिमाग़, इस पूँजी की तू कीमत तो समझ। यदि बैंक में एक भी पैसा न हो, फिर भी तू करोड़पति है! तेरी कितनी पूँजी है, उसे, बेचकर देख, चल। इन दो हाथों को भी तू नहीं बेचेगा। तेरे पास बेहिसाब पूँजी है। इतनी पूँजी है, ऐसा समझकर तुझे संतोष रखना है। पैसे आएँ या न आएँ लेकिन दोनों टाइम खाना मिलना चाहिए।

फूलिश (मूर्ख) नुकसान देखता है जबकि समझदार व्यक्ति तो क्या रहा, उसे देखता है। आपके पास क्या है, उसे देखो, जो चला गया उसे मत देखना।

समझ की कमी

लोगों को खाने-पीने की कमी नहीं है लेकिन समझ की कमी है।

एक मिल मालिक से पूछा कि 'आपका

कारोबार कैसा चल रहा है?' तब उन्होंने कहा कि, 'पूरा डिरेलमेन्ट हो (उलझ) गया है।' मैंने कहा, 'बहुत अच्छा हो गया। अच्छा हुआ, झंझट खत्म हुई, सुख से भजेंगे श्री गोपाल!' मैंने उनसे पूछा, 'ऐसा कैसे हो गया?' तब कहने लगे, 'मिल से थोड़े-बहुत रुपये कमाए थे, उन्हें बैंक में रखे थे तो बैंक वालों ने वापस दिए ही नहीं! अब दे ही नहीं रहे! पहले बैंक से कुछ लोन लिया था, अब बैंक वाले दे ही नहीं रहे इसलिए मेरा सब ठंडा पड़ गया है। अब, आप मुझे विधि कर दीजिए। मैंने कहा, 'कर दूँगा! कर दूँगा!' मुझे लगा कि बेचारा बहुत दुःखी है। इस इंसान को बैंक देगा नहीं, चाहे इसकी मिल है लेकिन मिल का क्या करेगा? मिल को ओढ़ेगा या बिछाएगा? फिर उसने मुझे व कुछ लोगों को अपने घर बुलाया। कहने लगा कि, 'पधारिये! मेरे घर में आपके चरण पड़ेंगे तो मेरा कुछ काम बन जाएगा' फिर मैंने कहा, 'आएँगे'। तो हम उनके घर गए, वहाँ चाय-पानी-नाश्ता किया। फिर वे एक पैकेट में रुपए देने लगे। तब मैंने कहा, 'आपके रुपए नहीं ले सकते। आपकी ऐसी परिस्थिति में हमें रुपयों का क्या करना है?' हज़ार रुपए ही थे, ज़्यादा नहीं थे। तब वे कहने लग, 'नहीं, दादाजी, ये तो लेने ही पड़ेंगे। आप जैसा समझते हैं, वैसा नहीं है। जो दूसरा कारखाना है न, उसमें से साल भर में पाँच लाख रुपए आते हैं।' मैंने कहा, 'अरे! मैं यहाँ कहाँ आपके साथ बैठा? 'मैं तो मन में समझ रहा था कि 'इसकी तो सारी ही स्त्रियाँ मर गई जबकि तू तो कहता है कि 'यहाँ दूसरी है!' कहता है, 'दूसरे पाँच लाख आते हैं।' अब इनका कैसे पार आएँ?

सभी दुःखी, उसका क्या कारण?

अनंत जन्मों से फायदे में आनंद नहीं आता और सिर्फ नुकसान का ही रोना रोते रहते हैं। नुकसान का ही रोना रोया है।

यानी कि पैसे हों तब भी दुःख और पैसे ना हों तब भी दुःख, बड़े प्रधान हो तब भी दुःख, गरीब हो तब भी दुःख। भिखारी हो तब भी दुःख, विधवा को दुःख, सधवा को दुःख, सात पति वाली को भी दुःख! दुःख, दुःख और दुःख! अहमदाबाद के सेठों को भी दुःख! इसका क्या कारण है?

प्रश्नकर्ता : उन्हें संतोष नहीं है।

दादाश्री : इसमें सुख था ही कहाँ? इसमें सुख था ही नहीं। ऐसा तो भ्रांति से लगता है। जैसे शराबी का एक हाथ गटर में पड़ा हो फिर भी कहता है, 'हाँ, यहाँ ठंडक लग रही है। बहुत अच्छा है', तो शराब की वजह से उसे ऐसा लगता है। बाकी, इसमें सुख है ही कहाँ? यह सब तो निरी जूठन ही है!

इस संसार में सुख है ही नहीं। सुख है ही नहीं और यदि सुख होता तो फिर मुंबई ऐसा नहीं होता। (सच्चा) सुख है ही नहीं। यह तो भ्रांति का सुख है और वह सिर्फ टेम्परेरी एडजस्टमेन्ट है।

फायदे में जितना सुख, नुकसान में उतना ही दुःख

धन का बोझ रखने जैसा नहीं है। बैंक में जमा हो तो 'चैन की साँस' लेते हैं और चले जाने पर दुःख होता है। इस संसार में किसी भी चीज़ में 'चैन की साँस' लेने जैसा नहीं है क्योंकि टेम्परेरी (अस्थायी) है।

संसार का निचोड़ क्या है? फायदा या नुकसान? बारह कमरे वालों को भी कमी है

और दो कमरें वालों को भी कमी है। कमी कमरों में नहीं है, तुझ में ही है। तू उसे ढूँढ निकाल न!

जिसे फायदे में सुख नहीं होता उसे नुकसान में दु:ख नहीं होता। फायदे में जितना सुख होता है उतना ही नुकसान में दु:ख होता है। यह बुद्धि ही फायदा नुकसान दिखाती है।

जिस बाज़ार में घाव(नुकसान) लगा, वहीं से वह भरेगा

प्रश्नकर्ता : व्यापार में भारी नुकसान हो गया है, तो क्या करूँ? व्यापार बंद कर दूँ या और कोई व्यापार करूँ? कर्ज़ बहुत हो गया है।

दादाश्री : रूई बाज़ार में हुए नुकसान की भरपाई किराना की दुकान खोलने से नहीं होगी। व्यापार में हुआ घाटा व्यापार से ही खत्म होगा, नौकरी से कुछ नहीं होगा। 'कॉन्ट्रैक्ट' के काम में हुआ घाटा कहीं पान की दुकान से खत्म हो सकता है? जिस बाज़ार में घाव लगा, उसी बाज़ार में वह घाव भरेगा, वहीं पर उसकी दवाई मिलेगी।

मैंने बचपन में ही यह हिसाब निकाल लिया था कि एक बाज़ार में हुए नुकसान की भरपाई दूसरे बाज़ार से भरपाई करने जाएगा तो क्या होगा? उसकी भरपाई नहीं होगी। कुछ लोग इतने कमअक्ल होते हैं कि कॉन्ट्रैक्ट के बिज़नेस में हुए नुकसान की भरपाई पान की दुकान से करने जाते हैं। अरे, भरपाई ऐसे नहीं होगी। कॉन्ट्रैक्ट के बिज़नेस में हुए घाटे की भरपाई कॉन्ट्रैक्ट से ही होगी। जबकि वह पान की दुकान खोलता है, उससे कुछ नहीं मिलेगा। बल्कि लोग तेरा गल्ला भी ले जाएँगे और तेरा तेल निकाल देंगे। उसके बजाय यदि पैसे न हों फिर भी वहाँ जाकर खड़े रहना। उस दिन ज़रा अच्छा-सा पैन्ट पहनकर जाना। यदि किसी से दोस्ती हो गई तो फिर से काम शुरू हो जाएगा और दोस्त-वोस्त सब मिल जाएँगे।

भीतर अनंत शक्तियाँ हैं। वे शक्ति वाले क्या कहते हैं कि 'हे चंदूभाई! आपका क्या विचार है?' तब भीतर से बुद्धि बोलती है कि 'इस व्यापार में इतना घाटा हुआ है। अब क्या होगा? अब नौकरी करके घाटे की भरपाई करो न!' भीतर अनंत शक्ति वाले क्या कहते हैं, कि 'हमसे पूछो न! बुद्धि की सलाह क्यों लेते हो? हमारे पास अनंत शक्तियाँ हैं!' जो शक्ति घाटा करवाती है, उसी शक्ति के माध्यम से फायदा ढूँढो न! घाटा करवाती है दूसरी शक्ति और फायदा ढूँढते हो किसी और से! तो फिर नुकसान कैसे खत्म होगा?

यदि आपका 'भाव' नहीं बदला तो इस संसार में ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो आपकी इच्छानुसार न बदले। ऐसी अनंत शक्तियाँ अपने भीतर हैं लेकिन अपने नियम (लॉ) ऐसे होने चाहिए कि किसी को दु:ख न हो, किसी की हिंसा न हो। हमारा 'भाव' का लॉ इतना दृढ़ होना चाहिए कि भले ही देह छूटे पर हमारा भाव न टूटे। यदि देह जाएगी तो एक ही बार जाएगी इसलिए इसमें डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। इसी तरह से डरते रहेंगे तब तो लोगों की हालत ही खराब हो जाएगी न! कोई सौदा ही नहीं करेगा न! हमने तो ऐसे बड़े-बड़े लोग देखे हैं जो दलाल होते हैं। वे चालीस लाख रुपए की वसूली की बातें करते हैं और फिर कहते क्या हैं कि, 'दादा, बहुत से लोग उल्टा ही बोलते हैं, क्या होगा?' तब मैंने कहा कि 'ज़रा धीरज रखना होगा, नींव मज़बूत रखनी होगी।'

ये गाड़ियाँ इतनी स्पीड से चलती हैं, फिर भी उसमें से जीवित निकल जाते हैं तो क्या व्यापार में से सेफ नहीं निकल पाएँगे? बाहर तो ज़रा-ज़रा देर में डर लगता है, कुछ देर में टकरा जाएँगे ऐसा भय लगता है लेकिन कोई टकराते हुए दिखाई नहीं देता। क्या सभी टकरा जाते हैं? जब वे लोग निकल जाते हैं, तो क्या ये नहीं निकल पाएँगे? यदि उस रास्ते पर डर घुस गया न, तो फिर आप सांताक्रुज़ से यहाँ दादर तक कैसे आओगे? और आ जाते हो तो आप मूर्छित हो तभी डर नहीं लगेगा। अत: भीतर से ज़रा स्ट्रोंग रखो न! अर्थात् जिस जगह से घाव हुआ, उसी जगह से वह भरेगा इसलिए जगह मत बदलना। यानी कि जहाँ से घाटा हुआ, वहीं से भरपाई करना।

अंधा बुने और बछड़ा चबाए

ऐसा है न, बचपन से लोग पैसे कमाते रहते हैं लेकिन बैंक में देखने जाएँ तो कहेंगे कि 'दो हज़ार ही पड़े हैं!' और दिन भर, हाय-हाय, हाय-हाय। दिन भर कलह, क्लेश और झगड़े। अब, अनंत शक्ति है, आप भीतर जैसा सोचो, बाहर वैसा ही हो जाता है। इतनी अधिक शक्ति है। ये तो सोचना तो क्या लेकिन अगर मेहनत करके करने जाए, तब भी बाहर हो नहीं पाता। तब बोलो, मनुष्यों ने कैसा दिवाला निकाला है!

अंधा बुने और बछड़ा चबाए, उसी को संसार कहते हैं। अंधा रस्सी बुनता जाता है, आगे-आगे बुनता चला जाता है और पीछे वह रस्सी पड़ी रहती है, उसे बछड़ा चबाता जाता है। ठीक वैसे ही अज्ञानी की सभी क्रियाएँ व्यर्थ जाती हैं। मरकर वापस अगला जन्म बिगाड़ता है, मनुष्यपन भी नहीं मिलता! अंधे को लगता है कि, 'ओहो, पचास फुट की रस्सी बन गई और जब लेने जाए तब कहता है कि 'यह क्या हो गया?' 'अरे, वह बछड़ा सब चबा गया!'

पूरे संसार की मेहनत कोल्हू चला-चलाकर बेकार जाती है। वह बैल को खली देता है, जबकि यहाँ बीवी हांडवे (गुजराती व्यंजन) का टुकड़ा देती है तो चला। दिन भर बैल की तरह कोल्हू चलता रहता है!

ग्यारह सालों में हो जाते हैं नष्ट

यह पैसों का काम ऐसा है कि ग्यारहवें साल में पैसा नष्ट हो जाता है। दस साल तक चलता है। वह इन सही पैसों की बात हैं। गलत पैसों की तो बात ही अलग है! सही पैसे ग्यारहवें साल में खत्म हो जाते हैं!

प्रश्नकर्ता : यानी कि चले जाते हैं, दादा?

दादाश्री : स्वभाव ही है। चंचल स्वभाव। तब लोग क्या कहते हैं? नहीं, हम तो नहीं निकालते! अभी 1985 चल रहा है, तो ग्यारह सालों पहले कौन सा साल था?

प्रश्नकर्ता : 1974

दादाश्री : 1974 के पहले का कोई पैसा अपने पास नहीं होता है! 1974 के बाद जो पैसे कमाए उतना यदि हम दस साल में नहीं कमाएँगे तो खत्म!

अब लोग कहते हैं, 'मेरे पैसे तो अठारह सालों से बैंक में ही हैं। वे टिके हुए ही हैं न?' तब हम कहेंगे, 'नहीं, अभी 1985 की साल में आपके पास कौन-सी लक्ष्मी हैं? 1975 तक की ही रहेगी। उसका यदि आप हिसाब निकालोगे तो पता चलेगा। 1975 से पहले की तो कहीं

भी खर्च हो ही गई होगी। यह तो जो 1975 के बाद के दस सालों में रही होगी, वही होगी। हिसाब निकालोगे तो पता चलेगा या नहीं? अब जब 1986 आएगा तब 1976 के बाद की लक्ष्मी रहेगी। यदि एक दशक के लिए भी इंसान का खराब समय आ जाए तो खत्म हो जाता है, उड़ जाता है! अब बहुत ज़्यादा कल्पनाएँ करने की ज़रूरत नहीं है। सब 'व्यवस्थित' है। शांति से, आराम से सो जाना। यह तो, चिंता करने वाले के लिए ये सारी झंझटें है! उन्हें इस सारी झंझट की ज़रूरत है! वर्ना, नींद कैसे आएगी? अत: थोड़ी-थोड़ी चाहिए।

पैसों की भी एक्सपायरी डेट

रुपयों का नियम कैसा है कि कुछ दिनों तक टिकते हैं और फिर अवश्य ही चले जाते हैं। रुपया बदलता ज़रूर है, फिर चाहे फायदा करवाए, नुकसान करवाए या ब्याज़ में मिले लेकिन बदलता ज़रूर है। वह स्थिर नहीं रहता। वह स्वभाव से ही चंचल है। अत: यह ऊपर चढ़ जाता है तब फिर वहाँ पर उसे बंधन लगता है। उतरते समय उतर नहीं पाता जबकि चढ़ते समय तो उत्साह में चढ़ जाता है। चढ़ते समय तो उत्साह से यों पकड़-पकड़कर चढ़ जाता है लेकिन उतरते समय तो जैसे बिल्ली पूरा ज़ोर लगाकर मटकी में मुँह डालती है और फिर निकलते वक्त कैसा होता है? वैसा ही इसमें होता है।

अनाज तीन-पाँच सालों में निर्जीव हो जाता है उसके बाद फिर वह नहीं उगता।

ग्यारहवे साल में पैसे बदल जाते हैं। पच्चीस करोड़ का आसामी हो लेकिन ग्यारह साल तक यदि उसके पास एक आना भी न आए, तो वह खत्म हो जाएगा। जैसे इन दवाइयों की 'एक्सपायरी डेट' (समाप्ति) लिखते हो, वैसे ही लक्ष्मी की भी ग्यारह साल की 'एक्सपायरी डेट' होती है।

प्रश्नकर्ता : लोगों के पास तो पूरी ज़िंदगी लक्ष्मी रहती है न?

दादाश्री : आज 1977 चल रहा है तो आपके पास 1966 से पहले की लक्ष्मी नहीं होगी।

प्रश्नकर्ता : ग्यारह सालों का ही नियम है!

दादाश्री : जैसे दवाइयों में दो साल की 'एक्सपायरी डेट' होती है, छ: महीनों की होती है, अनाज की तीन साल की होती है, वैसे ही लक्ष्मी जी की ग्यारह साल की होती है।

लालच में पड़ा तो खत्म

प्रश्नकर्ता : आपने कहा न कि, 'ग्यारह साल में धन खत्म हो जाता है,' तो दस साल बाद हम उन पैसों से सोना खरीद लें तो वह टिकेगा न?

दादाश्री : नौवे साल में यदि सोना खरीद लो तो फिर वह टिकेगा लेकिन तब ऐसी बुद्धि नहीं रहती। वह कहेगा, 'लेकिन सोने पर ब्याज नहीं मिलता न! रख दो न, साठ हज़ार।' बुद्धि ऐसा कहती है कि 'यदि ब्याज पर रखेंगे तो बारह महीनों में छ: हज़ार आएँगे।'

अत: इन पैसों का धीरे-धीरे अच्छा उपयोग करना। या तो मकान बनवा लेना। थोड़े-बहुत सोने में रखना लेकिन सब बैंक में नहीं रखना। वर्ना, कभी कोई गुरु मिल जाएगा कि अभी शेयर बाज़ार में भाव अच्छे हैं। उस लालच में डाला तो वह गिरा!

नुकसान की भरपाई करते हुए हो जाए नुकसान

एक व्यक्ति की लोभ की गाँठ छूट ही

नहीं रही थी। फिर उसने शेयर बाज़ार में सौदे किए। फिर मुझे कहने लगा, 'दादा, पिछले साल से मेरे साठ हज़ार फँसे हुए हैं।' तब मैंने कहा, 'अरे, वहाँ पर तो लोभ की गाँठ छूटती नहीं और वापस यह क्या किया?' तब कहने लगा, 'लोभ के कारण ही!' और साठ हज़ार खो जाएँगे हैं इसलिए विधि कर दीजिए। तो विधि कर दी तो दस-पंद्रह हज़ार वापस आए। तो ऐसे चले जाएँ, उसके बजाए हम अच्छी तरह से समझदारी से खर्च न करें?

एक महात्मा कहते हैं, 'शेयर बाज़ार का काम मैं बंद कर दूँ या जारी रखूँ।' मैंने कहा, 'बंद कर देना। आज तक जो किया उतना धन वापस ले लो। अब बंद कर देना चाहिए। वर्ना अमरीका में आए, न आए जैसा हो जाएगा! जैसे थे वैसे ही। खाली हाथ घर लौटना पड़ेगा!' यदि किसी को पैसे दिए हों न, तो वह तो बेचारा खत्म होने के बाद भी याद रखता है कि 'मैंने उनसे लिए थे' और यदि वह कमाए तो हमें बुलाएगा कि, 'आना मेरे यहाँ' लेकिन यहाँ तो (शेयर बाज़ार) किसके वहाँ बुलाएगा? यह तो, यों ही, अपने हाथों से खो दिए।

पूरा संसार साधक-बाधक अवस्था में है, थोड़ा इकट्ठा करता है और वापस उससे ज़्यादा खो देता है। जब नुकसान की भरपाई करने जाता है तो ज़बरदस्त नुकसान कर देता है।

जब संयोग अच्छे न हो तब...

कोई बाहर वाला यदि मेरे पास संसार व्यवहार से संबंधित सलाह लेने आता है कि 'मैं चाहे कितनी भी माथापच्ची कर लूँ, तो भी कुछ होता नहीं है।' तब मैं कहता हूँ कि, 'अभी तेरा पाप का उदय है इसलिए यदि किसी से पैसे उधार लाएगा तो रास्ते में तेरी जेब कट जाएगी! इसलिए अभी तू घर बैठकर आराम से जो भी शास्त्र पढ़ता है, वे पढ़ और भगवान का नाम लेता रह।'

जब संयोग अच्छे नहीं होते, तब लोग कमाने निकलते हैं। तब तो भक्ति करनी चाहिए।

पाप-पुण्य के अधीन

पुण्य के आधार पर आपके पुरुषार्थ से फायदा होता है और यदि पुण्य खत्म हो जाए तो उसी पुरुषार्थ से नुकसान होता है।

वह पाप-पुण्य के अधीन है। अत: जब पाप का उदय हो तब बहुत उलझनें बढ़ाएगा तो जो है वह भी चला जाएगा। अत: घर जाकर सो जा और थोड़ा-बहुत साधारण काम करना और यदि पुण्य का उदय है तो फिर भटकने की ज़रूरत ही क्या है? घर बैठे, काम करने से सबकुछ आमने-सामने आसानी से मिल जाएगा! अर्थात् दोनों ही अवस्थाओं में उलझनें बढ़ाने के लिए मना करते हैं। बात को सिर्फ समझने की ज़रूरत है।

लक्ष्मी का संग्रह करने जाएँ तो संग्रह नहीं होगा

लक्ष्मी जी, तो अपने आप आने के लिए बाध्य हैं और अपने संग्रह करने से संग्रहित नहीं होगी कि आज संग्रह करके रखेंगे तो पच्चीस साल बाद बेटी की शादी तक रहेगी, उस बात में कोई दम नहीं है और यदि कोई ऐसा माने तो वे सब बातें गलत हैं। वह तो, उस समय जो आएगी वही सही। फ्रेश होना चाहिए।

ये जो चींटियाँ हैं, वे सुबह चार बजे से उठती हैं। हम चाय पी रहे हों और शक्कर का दाना गिर जाए तो लेकर चली जाती हैं। 'अरे, तुम्हें तो बेटियाँ भी नहीं हैं।' फिर भी लेकर वहाँ पर जमा करती रहती हैं और कुछ नहीं करतीं।

अन्न के दाने, शक्कर के दाने जमा करती रहती हैं। फिर जब भूख लगे, तब वहाँ जाकर थोड़ा खाकर आ जाती हैं और फिर बाहर निकलकर पूरे दिन यही व्यापार। जब वह बहुत जमा हो जाता है न, तब चूहा छेद करके सब खा जाता है।

ऐसा है यह जगत्। अर्थात् यदि संग्रह करोगे तो कोई खाने वाला मिल जाएगा। अत: उसका फ्रेश ही उपयोग करना। जैसे यदि सब्ज़ी-भाजी का संग्रह करके रखें तो क्या होता है? वैसे ही, लक्ष्मी जी का फ्रेश ही उपयोग करो और लक्ष्मी जी का दुरुपयोग करना तो सब से बड़ा गुनाह है।

क्रेडिट और डेबिट

किसलिए लोभी बनकर घूमते रहते हो? यदि है तो चुपचाप, खा-पीकर मौज कर न! भगवान का नाम लिया कर! यह तो कहता है कि, 'ये जो चालीस हज़ार बैंक में हैं, वे कभी भी नहीं निकालने हैं।' वह समझता है कि ये क्रेडिट ही रहेंगे। नहीं, डेबिट का खाता भी होता ही है। जो जाने के लिए ही आता है।

मेरा कहना है कि गंभीरता से रहो, शांति से रहो क्योंकि जो लोग जिस *पूरण-गलन* (चार्ज और डिस्चार्ज) के लिए दौड़-भाग कर रहे हैं और गुणाकार-भागाकार कर रहे हैं, वे खुद का जन्म बिगाड़ रहे हैं जबकि बैंक-बैलेन्स में कोई बदलाव होगा नहीं, वह नैचुरल है। नैचुरल में क्या कर सकते हैं? यानी कि हम आपका यह भय टालते हैं। 'जैसा है वैसा' बता रहे हैं कि जोड़-बाकी किसी के हाथ में नहीं है, वह नेचर के हाथ में है। बैंक में बढ़ाना भी नेचर के हाथ में है और बैंक में से घटाना भी नेचर के हाथ में है। वर्ना, बैंक वाले एक ही खाता रखते। सिर्फ क्रेडिट का ही रखते, डेबिट का रखते ही नहीं लेकिन वे जानते हैं कि डेबिट हुए बिना रहेगा नहीं। कुछ लोग तय करते हैं कि 'अब, इस बार बैंक में रखे हुए एक लाख रुपये मुझे निकालने ही नहीं हैं। यदि निकालेंगे तभी झंझट होगी न!' अरे, लेकिन लोगों ने डेबिट का खाता किसलिए रखा है? बैंक वाले जानते हैं कि ये लोग कभी न कभी रुपए निकाले बगैर रहेंगे नहीं। अंत में मरेगा तो सही।

यानी यह सब नैचुरली होता रहता है, इसमें क्यों चिंता कर रहे हो? 'डोन्ट वरी!' गुणाकार-भागाकार करना बंद कर दो न! फिर भी लोग चुपचाप गुणाकार-भागाकार करते हैं न, कि 'अब यह मिल तो तैयार होने वाली है, अब दूसरा कारखाना लगाएँ।' अरे, छोड़ न! ये बच्चे कहते हैं, कि 'पिता जी, सो जाइए।' सभी कहते हैं कि 'ग्यारह बज गए हैं, आपकी तबीयत ठीक नहीं है, (ब्लड) प्रेशर बढ़ गया है, तो अब आराम से सो जाइए न!' लेकिन नहीं, ओढ़कर फिर से योजना बनाता है। ओढ़कर क्यों, ताकि उसकी चंचलता कोई देख न ले। यानी जोड़-बाकी तो नैचुरल हो रही है लेकिन गुणाकार-भागाकार यह ओढ़कर करता रहता है!

यदि इतना ही वाक्य समझ ले तो फिर बैंक वाले के साथ कोई झंझट रहेगी क्या? इनसे पूछें कि 'एक लाख रुपए आप यहाँ रखकर जा रहे हो तो उन्हें कब निकालोगे?' 'वह पता नहीं है।' तू निकालेगा वह तय है! तब कहता है कि 'मेरी इच्छा नहीं है।' अब यदि रुपए निकालने की इच्छा नहीं हो फिर भी वह कब निकाल लेगा, कहा नहीं जा सकता। अरे! तेरा खुद का निश्चय डावाँडोल, है! लेकिन कहता क्या है कि 'इच्छा नहीं है।' तय किया हो कि 'निकालना ही

नहीं हैं, अब इतने तो बचाने ही हैं।' अरे! तू ही नहीं रहेगा तो फिर ये कैसे बचेंगे! अरे, यह किस तरह की पॉलिसी लेकर बैठा है तू! इसके बजाय खा-पीकर खर्च कर न! ताज़ी सब्जियाँ आती हैं, वह खा न आराम से! फ्रूट लाकर शांति से खा और पत्नी को दो-चार अच्छे गहने बनवा दे। वह बेचारी रोज़ किच-किच करती रहती है फिर भी लाकर नहीं देता!

यह सब क्या है? *पूरण-गलन* है। यह सब हमने अपने ज्ञान से देखकर कहा है! अब क्या किसी प्रकार का भय रहा? एक तरफ कहते हैं कि 'व्यवस्थित' है और दूसरी तरफ कहते हैं, बैंक में जोड़-बाकी या फिर बहीखाते के अकाउन्ट में जोड़-बाकी या फिर वह इन्कम टैक्स वाला जेब काट लेगा, वह सब 'नैचुरल' है। उसके हाथ में सत्ता नहीं है। वह तो बेचारा निमित्त है लेकिन गुणाकार-भागाकार आपके हाथ में है। यह 'ज्ञान' लिया है तो अब आप 'खुद' वह गुणाकार-भागाकार नहीं करते हो क्योंकि 'आप' तो 'आत्मस्वरूप' बन गए। गुणाकार-भागाकार कब तक कर रहे थे? कब तक योजनाएँ बना रहे थे? अज्ञान था तब तक। अब यदि ऐसे ओढ़कर योजना बनाते हैं तो वह 'इफेक्ट' है। वह योजना अगले जन्म के लिए नहीं है, वह तो *निकाली* योजनाएँ हैं। दो प्रकार की योजनाएँ, एक ग्रहणीय योजना और दूसरी *निकाली* योजना। ग्रहणीय योजना में भीतर खटकता रहता है। *निकाली* योजना शांत भाव से होती रहती है। जो योजना बनाई है, उसका *निकाल* तो करना पड़ेगा न? और आपका तो पूरा दिन *निकाली* भाव रहता है न?

लक्ष्मी स्वभाव से ही वियोगी

आज वह कहता है कि 'पैसे हैं', फिर दो साल बाद कुछ भी नहीं रहता। अत: लक्ष्मी का स्वभाव कैसा है? चंचल। उसका कोई ठिकाना नहीं है। उसका इतना अधिक आधार मत लेना। आधार सिर्फ, 'आत्मा' का ही लेना, बाकी की सभी चीज़ें चंचल हैं।

लक्ष्मी का स्वभाव ही वियोगी है। वह कहता है कि, 'अब मेरे पास आठ पीढ़ी तक साधन(लक्ष्मी) रहें तो अच्छा है', लेकिन उसका स्वभाव ही वियोगी है अत: हमें कहना चाहिए कि 'हमारी ऐसी इच्छा नहीं है कि तू जा।' तू यहाँ रह, उसके बावजूद भी यदि तुझे जाना है तो मेरी मना ही नहीं है।' यदि ऐसा कहेंगे तो उसे ऐसा नहीं लगेगा कि 'इन्हें हमारी परवाह ही नहीं है।' 'हमें दस बार तेरी परवाह है लेकिन यदि तुझ से नहीं रहा जा सके तो तेरी मरज़ी की बात है।' उसे नहीं रहना हो तो क्या फिर उसे माँ-बाप कहेंगे? यह तो माँ-बाप को ही माँ-बाप कहेंगे।

वह तो कम होती ही जाती है

पैसा जाने के लिए ही आता है। क्यों आता है? जैसे कि अपने कम्पाउन्ड में एक लाख मन बर्फ का ढेर बनाकर मन में खुशी हों कि अब तो शांति हो गई, कितने दिनों के लिए?

प्रश्नकर्ता : वह तो पानी बन जाएगा।

दादाश्री : यह लक्ष्मी यानी कि बर्फ (जैसी) है जितनी रखनी हो उतनी रखना। वह तो निरंतर कम ही होती जाती है।

प्रश्नकर्ता : दादा, यदि बर्फ हो तो वह तो ठंडक भी देता है जबकि यह लक्ष्मी तो बेचेनी करवाती है।

दादाश्री : यह तो ऐसा है कि दु:ख करवाती है। अर्थात् लक्ष्मी आएँ तब भी बहुत दु:ख पड़ते

हैं, उसे लाने में भी बहुत दु:ख पड़ते हैं। अगर उसे रखना हो तब भी दु:ख होता है। कहाँ रखेंगे? और संभाल पाएँगे या नहीं? और फिर उसके आने के बाद काका ससुर का बेटा आता है। अरे भाई! ससुर का बेटा, यदि साला आया होता तो ठीक था लेकिन तू कैसे आया, यहाँ पर! तो कहता है, 'भाई, दस हज़ार डॉलर दो न मुझे!' अर्थात् यह तो परेशानी ही है। अब कुछ देखना तो पड़ेगा न! क्या यों ही दे सकते हैं?

प्रश्नकर्ता : सही बात है, देखना तो पड़ेगा। अगर है तो देखना पड़ेगा न।

दादाश्री : यह परेशानी आ गई। और जाते समय, खर्च होते समय भीतर चम-चम-चम होता रहता है, कि 'अरे! खर्च हो गए, खर्च हो गए।' तब भाई, इसे क्या साथ में ले जाना था? यहाँ से कोई ले गया क्या? तो फिर क्या यह हिसाब नहीं समझ सकता कि 'यह ले जाने वाली चीज़ नहीं है।'

जितना *पूरण* हुआ उतना *गलन* होगा ही

यह तो *पूरण-गलन* स्वभाव वाला है। जितना *पूरण* (चार्ज) हुआ, उतना ही फिर *गलन* (डिस्चार्ज) होगा और यदि *गलन* नहीं होता न, फिर भी परेशानी हो जाती है। *गलन* होता है इसलिए फिर से खा पाते हैं। यह श्वास लिया वह *पूरण* किया और उच्छ्वास निकाला वह *गलन* है। सबकुछ *पूरण-गलन* स्वभाव वाला है। इसलिए हमने खोज की है कि 'कमी भी नहीं और अतिशय भी नहीं!' कमी वाले सूख जाते हैं और अतिशय वाले को सूजन आ जाती है। अतिशय का मतलब क्या कि लक्ष्मी जी दो-तीन साल तक जाएँ ही नहीं। लक्ष्मी जी तो चलती ही भली, वर्ना दु:खदाई हो जाएँगी।

यह तो *पूरण-गलन* है। इसमें *पूरण* के समय हँसने जैसा नहीं है और *गलन* के समय रोना नहीं है। जब दु:ख का *पूरण* होता है तब क्यों रोता है? *पूरण* में यदि तुझे हँसना है तो हँस। *पूरण* यानी जब सुख का *पूरण* हो तब भी हँसना और दु:ख का *पूरण* हो तब भी हँसना। जबकि इनकी तो भाषा ही अलग है न! पसंद और नापसंद, दोनों ही रखते हैं न! सुबह जो नापसंद है वही फिर शाम को पसंद करता है! सुबह कहता है, 'तू यहाँ से चली जा' और शाम को कहता है, 'तेरे बगैर तो मुझे अच्छा नहीं लगेगा!' अर्थात् भाषा ही अनाड़ी लगती है न!

संसार का नियम ही ऐसा है कि जो *पूरण* होता है, उसका *गलन* हुए बगैर नहीं रहता। यदि सभी लोग पैसे इकट्ठे करते रहे तो मुंबई में कोई भी व्यक्ति कह सकता है कि 'मैं सब से ज़्यादा अमीर हूँ' लेकिन कोई भी इस तरह से संतुष्ट होकर नहीं बोलता क्योंकि नियम ही नहीं है ऐसा!

जब पाप का *गलन* हो तब...

पाप का *पूरण* कर रहा है। जब उसका *गलन* होगा तब पता चलेगा! तब हड्डियाँ टूट जाएँगी! लगेगा जैसे अंगारों पर बैठे हों! पुण्य का *पूरण* करने पर पता चलेगा कि कैसा अलग ही आनंद आता है! अत: जिस-जिसका पूरण करो, वह सोच-समझकर करना कि गलन होने पर कैसा परिणाम आएगा! *पूरण* करते समय निरंतर ध्यान में रखना, पाप करते समय, किसी को ठगकर पैसे इकट्ठे करते समय निरंतर ध्यान में रखना कि इनका भी *गलन* होगा। वे पैसे यदि बैंक में रखोगे तब भी वे जाएँगे तो सही। उनका भी *गलन* तो होगा ही। इन पैसों को इकट्ठे करने में जो पाप किया, जो रौद्रध्यान किया वह और उसका

गुनाह साथ में आएगा ही और जब उसका *गलन* होगा तब तेरी क्या दशा होगी!

आर्तध्यान व रौद्रध्यान से घटे लक्ष्मी

लोग तो दिन भर आर्तध्यान व रौद्रध्यान करते रहते हैं। उससे लक्ष्मी तो उतनी ही आएगी। भगवान ने कहा है कि धर्मध्यान से लक्ष्मी बढ़ती है जबकि आर्तध्यान व रौद्रध्यान से लक्ष्मी कम होती है। ये तो लक्ष्मी बढ़ाने के लिए आर्तध्यान व रौद्रध्यान का करते हैं। वह तो, यदि पहले का पुण्य होगा तभी मिलेगी।

अभी यदि कोई किसी सेठ से ऐसा कहकर दो हीरे ले जाए कि 'दस दिन में पैसे दे दूँगा'। फिर छः-बारह महीने तक उसे पैसे न दे, तो क्या होगा? सेठ पर कुछ असर होगा क्या?

प्रश्नकर्ता : मेरे पैसे चले गए, ऐसा लगेगा।

दादाश्री : मेरा कहना यह है कि एक तो हीरे गए, वह नुकसान तो हुआ ही और ऊपर से फिर क्या आर्तध्यान करना चाहिए? और हीरे तो हमने राज़ी खुशी से दिए, तो फिर उसका कुछ दुःख नहीं होना चाहिए न?

प्रश्नकर्ता : लोभ था इसलिए दिए न?

दादाश्री : और फिर वही लोभ आर्तध्यान करवाता है। अर्थात् यह सब अज्ञानता के कारण होता है। जबकि ज्ञान में कोई प्रकृति बाधक नहीं है। आत्मा को, स्वभाव दशा में कोई प्रकृति बाधक नहीं है। अर्थात् हीरे गए तो गए लेकिन फिर वे रात को सोने नहीं देते। दस दिन होने के बाद यदि वह ठीक से जवाब न दे तो तभी से नींद हराम हो जाती है क्योंकि पचास हज़ार के हीरे हैं, जबकि सेठ की पूँजी कितनी? पच्चीस लाख की होगी। अब उसमें से पचास हज़ार के हीरे कम करके साढ़े चौबीस लाख की पूँजी तय नहीं करनी चाहिए? हम तो ऐसा ही करते थे। मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी में बस ऐसा ही किया है!

चिंता करके उठाता है दो नुकसान

सेठ के हीरे के पैसे नहीं आएँ फिर भी क्या सेठानी चिंता करती है? तो क्या, वह पार्टनर नहीं है? बराबरी की पार्टनरशिप में है। अब जब सेठ कहता है कि, 'उसे हीरे दिए लेकिन उनके पैसे नहीं दे रहा है।' तब सेठानी क्या कहेगी कि, 'भाई, हमारा हिसाब होगा, यदि वे नहीं आने हैं तो नहीं आएँगे।' फिर भी सेठ के मन में ऐसा होता है कि, 'ये बेअक्ल क्या बोल रही है!' यह अक्ल का बोरा! यदि उसने हीरे के पचास हज़ार रुपए नहीं दिए तो हमें अपनी पूँजी में से पचास हज़ार घटाकर बाकी की पूँजी तय कर लेनी है। यदि अपनी पूँजी तीन लाख हो तो पचास हज़ार घटाकर ढाई लाख की पूँजी तय कर लेनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : समाधान का यह तरीका कितना ग़ज़ब का है, एकदम तुरंत समाधान हो जाता है!

दादाश्री : वह तो तय कर लेना है, आसान रास्ता ढूंढकर! कठिन रास्ता बनाकर क्या करना है?

जो घाटे का सौदा करे उसे बनिया कैसे कहेंगे? घर पर अपने पार्टनर, पत्नी से पूछें कि, 'ये पचास हज़ार चले गए तो आपको कोई दुःख हो रहा है?' तब वे कहेंगी, 'गए तो वे अपने नहीं थे।' तब समझ नहीं जाना चाहिए कि ये पत्नी कितनी समझदार है, सिर्फ मैं ही बेअक्ल हूँ! और फिर हमें पत्नी का ज्ञान तुरंत पकड़ लेना

चाहिए न? एक घाटा हुआ उसे होने दो लेकिन दूसरा नहीं उठाना है। जबकि यह तो घाटे का ही रोना रोता है! अरे, चले गए उसका रोना क्यों रोता है? फिर से ऐसा न हो उसकी चिंता कर। हमने तो साफ-साफ ऐसा ही रखा था कि जितने गए उतने कम कर दो!

देखो न, पचास हज़ार के हीरे ले जाने वाला आराम से पहनता है और यहाँ सेठ चिंता करता रहता है! सेठ से पूछें कि, 'ऐसे उदास क्यों दिख रहे हो?' तब कहता है, 'कुछ नहीं, कुछ नहीं। यह तो ज़रा तबीयत ठीक नहीं रहती।' वहाँ गड़बड़ करता है! अरे, सच बता दे न कि, 'भाई, पचास हज़ार के हीरे के पैसे नहीं आए हैं, मुझे उसकी चिंता हो रही है।' अगर सही बात बता देगा तो उसका उपाय मिलेगा! यह तो सही बात नहीं बताता बल्कि उलझकर गड़बड़ करता रहता है।

दो नुकसान उठाता है; एक तो, पैसे गए सो गए और दूसरा, चिंता होती है, वह नुकसान।

यदि नुकसान की चिंता करनी हो तो पूरी ज़िंदगी करना, वर्ना करना ही मत।

क्या आंतरिक पूँजी की ज़रूरत नहीं है?

अभी, यदि हमारी आवक ज़रा अच्छी है एकदम शांति है, कोई झंझट नहीं है तो हमें कहना है कि 'चलो, भगवान के दर्शन कर आते हैं!' और लोग जो पैसे कमाने के लिए रह गए, वे तो अगर ग्यारह लाख रुपए कमाएँ तो उसमें हर्ज़ नहीं है लेकिन अगर अभी पचास हज़ार का घाटा होने लगे तो अशाता वेदनीय शुरू हो जाएगी! 'अरे, ग्यारह लाख में से पचास हज़ार घटा दे न!' तब कहता है, 'नहीं, उससे तो रकम कम हो जाएगी न!' 'अरे, रकम तू किसे कहता है? यह रकम कहाँ से आई? वह तो ज़िम्मेदारी वाली रकम थी इसलिए यदि कम हो जाए तो शोर मत मचाना। यह तो, जब रकम बढ़ती है तब तू खुश हो जाता है और कम हो जाए तब? अरे, पूँजी तो 'भीतर' ही है, हार्ट फेल करके उसे क्यों खत्म करना चाहता है? यदि हार्ट फेल हो जाए तो सारी पूँजी खत्म हो जाएगी या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हो जाएगी।

दादाश्री : तब यह सब किसलिए? तब वह कहेगी कि 'मेरे लिए तो वह पैसे की पूँजी कीमती है!' अरे, क्या आपको भीतर की पूँजी की ज़रूरत नहीं है?

नुकसान, वह आत्मा का विटामिन है

दु:ख वह आत्मा का विटामिन है और सुख देह का विटामिन है। फायदा देह का विटामिन है और नुकसान आत्मा का विटामिन है।

फिर भी तू दु:ख को आत्मा का विटामिन नहीं मानती और दु:ख को भगाना चाहती है। आत्मा का विटामिन नहीं लेती। नहीं? देख, मैं तो आत्मा का इतना अधिक विटामिन लेकर कैसा हो गया हूँ! यदि अभी कोई पचास हज़ार ले जाए न, तो मैं आराम से विटामिन फाँक लूँ! बहुत अच्छा हुआ! और कलह करने से क्या पचास हज़ार वापस आएँगे? नहीं?

प्रश्नकर्ता : नहीं आएँगे।

दादाश्री : कलह करने से गए हुए वापस नहीं आएँगे।

प्रश्नकर्ता : वह तो समझ में आ गया। वापस नहीं आए!

दादाश्री : क्योंकि मैं सब जानता हूँ कि यह किस वजह से हुआ है?

प्रश्नकर्ता : जब पचास हज़ार चले गए, तब कलह की थी लेकिन वापस नहीं आए इसलिए समझ में आ गया कि वापस नहीं आते हैं।

दादाश्री : समझ में आ गया न! हाँ! पचास हज़ार वापस नहीं आए! उसकी अभी भी उम्मीद तो होगी न! उम्मीद नहीं रही?

प्रश्नकर्ता : उम्मीद तो है लेकिन उससे क्या होगा?

दादाश्री : जब तक उम्मीद है तब तक कहीं से थोड़ा-बहुत मिल भी जाएगा। हमें डेड मनी (पैसे चले गए ऐसा) नहीं कहना है।

प्रश्नकर्ता : नहीं कहूँगी।

दादाश्री : डेड मनी मत कहना, 'दादा, अस्सी हज़ार रखे हैं, अब क्या होगा?' तब मैंने कहा, 'अब जो हो गया, वह हो गया! अब डेड मनी न हो जाए, इतना ध्यान रखना!'

आपके साठ हज़ार तो अभी डेड मनी नहीं हुए हैं लेकिन अगर हम स्टीमर में जा रहे हों और साठ हज़ार की नोटों से भरा हुआ आपका पर्स बाहर डेक पर घूमते समय समुद्र में गिर जाएँ, तो फिर वे डेड मनी कहलाएँगे। इसे डेड मनी नहीं कहा जाएगा। ये तो आएँगे वापस। रुपए में से, दो आने-चार आने वापस आएँगे।

जाता है *पुद्गल* का ही

जहाँ लाख रुपये दिए हों, वहाँ अगर कभी ऐसा लगे कि 'पार्टी' ठीक नहीं है, फिर भी शंका मत होने देना। 'अब क्या होगा?' उसे शंका होना कहते हैं। क्या होना है? यह शरीर भी चला जाएगा और रुपये भी चले जाएँगे। सबकुछ चला जाएगा न? विलाप ही करना है न अंत में! अंत में इसे जला ही देना है न! तो भला पहले से ही मरने का क्या मतलब है! जी न, चैन से!

जब ऐसा होता है तब उस दिन मैं क्या करता हूँ? 'अंबालाल भाई, जमा कर लो, रुपये आ गए!' ऐसा कह देता हूँ। नुकसान हुआ उसके बजाय हमें चुपचाप रकम जमा कर लेना अच्छा है सामने वाला को पता न चले, उस तरह से।

आत्मा में से कुछ भी नहीं जाता, यह सब *पुद्गल* (पूरण और गलन होता है) का ही जाता है। जाने वाला जा रहा है तो जाने दो न, यहाँ से। कभी न कभी तो छोड़ना ही है! आत्मा के अलावा संसार की सभी चीज़ें, नुकसान गुणा नुकसान ही है।

नुकसान होगा तो *पुद्गल* का होगा, 'हमारा' नुकसान कभी भी नहीं होता। दोनों का व्यापर अलग, व्यवहार अलग और दुकान भी अलग! भौतिक के खाते का नुकसान शुद्धात्मा के खाते में मत लिखना। उसकी भरपाई भौतिक के खाते में से ही करनी है।

गलत पैसा दुःख देकर जाता है

ऐसा है, कि जितना सही धन है, पसीने का धन है, वह कभी भी जाता ही नहीं और यह बिना पसीने वाला गलत धन है न, वह अपने आप ही किसी न किसी रास्ते चला जाएगा, ऐसे जाएगा, वैसे जाएगा, अरे! जेब कटवाकर भी चला जाएगा लेकिन किसी न किसी रास्ते जाएगा, जाएगा और जाएगा ही। जो सही धन है, वह हमें सुख देकर ही जाएगा और जो गलत धन है,

वह दु:ख देकर जाएगा। वह फिर डॉक्टर से पेट कटवाता है, अंदर चीरे लगवाता है और हज़ारों रुपये खर्च करवाता है! यानी गलत धन दु:ख देता है, सही धन सुख देता है! हमारे यहाँ गलत धन नहीं आएगा। अभी तो ऐसा है कि गलत तो सब ओर घुस ही जाता है लेकिन हमारे यहाँ पर यों बहुत गलत धन नहीं घुसेगा। अत: किसी प्रकार का दु:ख उत्पन्न नहीं होगा। कुछ ऐसे लोग होंगे कि जिनके यहाँ गलत धन नहीं आता है, उन्हें दु:ख नहीं भोगना पड़ता।

इस लक्ष्मी के कारण ही ऐसा होता है। यदि लक्ष्मी निर्मल हो तो सब अच्छा रहता है, मन अच्छा रहता है। यह गलत लक्ष्मी घुस गई है उसी से क्लेश होते हैं। हमने कम उम्र में ही तय कर लिया था कि हो सके वहाँ तक गलत लक्ष्मी को घुसने ही नहीं देना है।

व्यापार में यदि कोई चालबाज़ लोग मिल जाएँ तो अपने पैसे खाने लगते हैं, तब भीतर हमें ऐसा समझना है कि अपने पैसे गलत हैं इसलिए ऐसे लोग मिले हैं। वर्ना चालबाज़ लोग मिलते ही क्यों? मेरे साथ भी ऐसा ही होता था। एक बार गलत पैसे आ गए थे, तब मुझे सभी चालबाज़ लोग ही मिले तब फिर मैंने तय किया कि ऐसा नहीं चाहिए।

फायदा व नुकसान दोनों में निभाया भागीदारी

यह तो ऐसा हुआ था कि एलेप्पी में हमारा ऑफिस था। हमारे और हमारे भागीदार का ऑफिस था वहाँ! सौंठ और काली मिर्च का बड़ा बिज़नेस था। काला-बाज़ार का जो धन इकट्ठा हुआ था, वह फिर वहाँ ऑफिस में डाला था। वहाँ पैसा डूब गया। तब हम खुश हो गए, शांति हो गई। उसके बाद हमारे भागीदार का पत्र आया कि भले ही डूब गया लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि अब वापस सब ठीक हो जाएगा इसलिए 'अब आखिरी, ज़्यादा नहीं तो मुझे चौदह हज़ार तो भेजो' इसलिए मैंने 1945-46 में उन्हें चौदह हज़ार भेजे और साथ में पत्र में लिखा कि, 'ये चौदह हज़ार डूब जाएँ तो चिंता किए बगैर वापस लौट आना। शायद अगर ये डूब जाए, हमने जो सोचा है वैसा न भी हो और डूब जाएँ तो परेशान मत होना लेकिन आप जल्द से जल्द वापस आ जाओ। हम रहेंगे तो फिर से कमा लेंगे। वर्ना यदि हम पर अटैक हो जाएगा तो क्या दशा होगी?' और फिर 1946 में ही अटैक शुरू हो गए। ये अटैक बढ़े कब से? 1939 में ही हिटलर ने पूरे वर्ल्ड में उथल-पुथल मचा दी, तभी से अटैक की शुरुआत हो गई। तब फिर मुझे मेरे भागीदार का पत्र मिला कि, 'मैं मानता था लेकिन मेरा माना हुआ उल्टा ही पड़ा और चौदह हज़ार डूब गए। इसलिए ये पैसे सिर्फ मेरे खाते में उधार रखना क्योंकि आपने मना किया था फिर भी मैंने किया।' तब मैंने कहा, 'अब दूसरे किसी भागीदार से ऐसा मत कहना। अगर मुझे कहोगे तब भी मुझे ऐसा कुछ नहीं करना है। मुझे तो दूसरे लाख खोकर आओगे फिर भी मैं तुम्हारी भागीदारी में से नहीं हटूँगा। आप जो कुछ भी करके आओ उसमें मैं भागीदार हूँ। अगर फायदा होता तो मैं उसमें से ले लेता नहीं? नहीं लेता था? मना करने के बावजूद भी यदि फायदा होता हो, तो क्या मैं नहीं लेता?'

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेते।

दादाश्री : तब क्या तुरंत ही वह न्याय समझ में नहीं आना चाहिए हमें? मैंने कहा, 'आप जो भी कुछ करके आते हो, उसमें हमें कोई हर्ज़ नहीं है।' तब फिर उनके मन में बहुत दु:ख हुआ।

मैंने कहा, 'चौदह हज़ार में क्या बिगड़ जाना था? हम तो ज़िंदा हैं! हम ज़िंदा रहेंगे तो फिर से दुनिया बना देंगे। जाने के बाद क्या ऐसी नई दुनिया बन सकती है?' हम ज़िंदा हैं, इतना कहा तो फिर सब ठीक हो गया।

रुपए चले जाएँगे और हम रहेंगे

व्यापार में ज़रा सा नुकसान होने पर लोग दु:खी-दु:खी हो जाते हैं। मैं अगर आपको अपनी पार्टनरशिप का नक्शा बताऊँ तो आपको आश्चर्य होगा। लाख-लाख रुपए डूब जाते थे तब भी हम जाने देते थे क्योंकि रुपए तो जाने ही हैं और हम रहेंगे। चाहे कुछ भी हो जाए लेकिन हम कषाय नहीं होने देते थे। लाख रुपए चले गए तो उसमें क्या कहना? हम हैं, जबकि पैसे तो धूल बराबर हैं!

यदि घर में सब लोग अच्छी तरह से हैं तो समझना कि फायदा है। उस दिन हिसाब में नुकसान हो, फिर भी फायदा है। दुकान की तबियत बिगड़े या नहीं, उसका कोई अर्थ नहीं है घर वालों की नहीं बिगड़नी चाहिए। ज्ञान होने से पहले हम में कॉमनसेन्स बहुत उच्च प्रकार का था। व्यापार में चाहे कितना भी घाटा हो या फिर अन्य कहीं पर भी चाहे कुछ भी हो जाए फिर भी कभी भी दु:खी नहीं होते थे। मैं कभी भी कीड़े की तरह जीया ही नहीं हूँ। हम तो तुरंत ही सार निकाल देते थे और तुरंत ही एडजस्टमेन्ट ले लेते थे।

पूँजी, अमानत के नाम पर

हमारे व्यापार में घाटा हो जाता तो मैं कह देता था कि, ''बीस हज़ार रुपए 'अमानत' के नाम पर जमा कर दो।'' फिर अमानत के नाम की पूँजी का हिसाब निकालते थे। अब यह पूँजी कहाँ रखें, वह तो भगवान ही जाने! वास्तव में तो वह पूँजी है ही कहाँ? उसके बावजूद भी ऐसी पूँजी हो और हमने संभालकर रखी हो और कोई ले जाए तो? यानी कब, कोई ले जाएगा उसका भी कोई ठिकाना नहीं है। किसके हाथ को किसका स्पर्श होगा उसका भी ठिकाना नहीं है। मेरी बात आपको समझ में आ रही है न?

यह तो किस्मत में लिखा हुआ है

व्यापार करते-करते मैंने सभी अनुभवों का सार निकाला था। बाकी, मैं तो व्यापार में भी पैसों के बारे में नहीं सोचता था। जो पैसों के बारे में सोचता है, उसके जैसा फूलिश (मूर्ख) कोई भी नहीं है! यह तो भाग्य में लिखा हुआ है भाई! घाटा भी भाग्य में लिखा हुआ है। बिना सोचे भी घाटा होता है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : होता है।

दादाश्री : और फायदा?

प्रश्नकर्ता : फायदा भी होता है।

दादाश्री : मैं तो बचपन से ही समझ गया था कि यह तो भाग्य में लिखा हुआ है।

हर एक व्यापार उदय और अस्त वाला होता है। यदि बहुत सारे मच्छर हों तब भी पूरी रात सोने नहीं देंगे और दो मच्छर हों तब भी पूरी रात नहीं सोने देंगे। तब हमें ऐसा कहना है कि 'हे मच्छरमय दुनिया! जब दो ही नहीं सोने दे रहे हैं तो सभी आ जाओ न!' ये नफा-नुकसान, ये मच्छर ही हैं। उन्हें उड़ाते रहना है और हमें सो जाना है।

नुकसान में मेरी पार्टनरशिप कितनी?

व्यापार में ज़रा सा भी नुकसान हो तो

लोग दु:खी हो जाते हैं। व्यापार करने वाले की छाती तो बहुत बड़ी होनी चाहिए। यदि छाती बैठ जाएगी तो काम बैठ जाएगा।

एक बार ऐसा हुआ कि एक साहब की वजह से एकदम से दस हज़ार रुपए का नुकसान कर दिया। एकदम से आकर काम को अस्वीकार कर दिया। जैसा कभी सोचा भी नहीं था। यों तो हमें पता भी रहता है कि भाई, हमें नुकसान हुआ है। फिर मैंने कहा, 'अरे ऐसा!' और उस अच्छे समय में पैसे की कीमत थी। अभी तो दस हज़ार की कीमत ही नहीं है न! तो उस समय मुझे ठेठ वहाँ तक असर पहुँच गया था कि उसकी चिंता होने लगी थी, अंदर तक असर हो गया था। फिर तुरंत ही उसके सामने मुझे अंदर से जवाब मिला कि इसमें पार्टनरशिप कितनी है? तो उस समय मैं और कांतिलाल दो पार्टनर थे लेकिन फिर मैंने हिसाब लगाया कि दो लोग तो काग़ज़ पर है लेकिन वास्तव में कितने लोग हैं? वास्तव में तो कांति भाई के बच्चे, उनकी वाइफ, बेटी, मेरी पत्नी, ये सभी पार्टनर हैं न? तब मैंने सोचा, 'इनमें से कोई चिंता नहीं करता है, मैं अकेला ही कहाँ अपने सिर पर लेकर बैठूँ?' उन दिनों उस विचार ने मुझे बचा लिया। बात तो ठीक है न? आपको कैसी लगती है मेरी बात? मेरा विचार ठीक है?

प्रश्नकर्ता : लेकिन ज्ञान होने से पहले न?

दादाश्री : ज्ञान होने से पहले (भी चिंता से तो) बचना तो चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, यदि कर्ज़ा हो जाए, तो नींद कैसे आएगी?

दादाश्री : सब सो जाएँ तो हमें भी सो जाना है, भले ही बीस लाख का कर्ज़ा हो। सभी सो जाएँ और हमें जागना? बाहर देख लेना कि सब सो रहे हैं? अगर कहे, 'हाँ,' तो हमें भी सो जाना है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा आपने यह जो बात बताई है, वह तो जब ज्ञानी का अवलंबन है, दादा सामने हैं तब यह बात समझ में आती है, वर्ना यों तो यह बात बहुत कठिन लगती है लेकिन दादा का बहुत बड़ा आधार है न!

दादाश्री : व्यवहार में जल्दबाज़ी करने से कैसे काम चलेगा? अत: यदि हम कोई दुकान खोलें तो उस बाज़ार के रिवाज़ होते हैं, नौ बजे दुकान खोलने के। अगर वह जल्दबाज़ है तो सात बजे ही खोल देता है। अरे! घनचक्कर! ऐसा मत करना। एक दिन सारी दुकानें देख आ। कितने बजे बाज़ार खुलता है, उस समय खोलना। बंद कितने बजे होता है, उस समय बंद कर देना। अर्थात् बाहर देख लेना। लोग जो करें वही हमें करना है। पच्चीस लाख का कर्ज़ा हो या पच्चीस लाख की वसूली, और घर में सब को देख लेना, आराम से सो रहे हैं या जाग रहे हैं? फिर समझ में आएगा कि साला मैं ही अकेला जाग रहा हूँ! मूर्ख हूँ! मूर्ख का बंदा! अरे! देख पत्नी भी सो रही है न! शी इज़ फिफ्टीन पर्सेन्ट पार्टनरशिप। (उसके पास पचास प्रतिशत भागीदारी है।) तो यदि वह सो रही है तो हमें भी आराम से छाती तानकर सो जाना है।

प्रश्नकर्ता : वह ठीक है लेकिन वे जो सो रहे हैं, उनसे कौन पूछने और माँगने आएगा? माँगने तो उसी के पास आएगा न? उसी को जबाब देना पड़ेगा न!

दादाश्री : हाँ, जवाब तो उसे ही देना

पड़ेगा लेकिन उसे (पत्नी को) भी चिंता होनी चाहिए न!

फर्ज़ निभाना है, चिंता नहीं करनी है

अब ये सभी नहीं जानते हैं फिर भी उनका चलता है तो मैं अकेला ही ऐसा बेअक्ल जीव हूँ कि सारी चिंता करता हूँ? तब फिर मुझ में अक्ल आ गई क्योकिं उनमें से कोई चिंता नहीं करता था, सभी भागीदार हैं फिर भी? वे चिंता नहीं करते तो मैं अकेला ही क्यों चिंता करूँ? जब वे नहीं करते तो मुझे क्यों करनी है? मुझे तो मेरा फर्ज़ निभाना है, चिंता-विंता नहीं करनी है। चिंता, फायदा-नुकसान वगैरह सब कारखाने का है, अपने सिर पर नहीं। हम तो फर्ज़ निभाने के अधिकारी हैं, बाकी सब कारखाने का है। यदि कारखाने को सिर पर लेकर घूमेंगे तो रात को कितनी नींद आएगी?

प्रश्नकर्ता : नहीं आएगी नींद, अनिद्रा जैसा हो जाएगा।

दादाश्री : नींद नहीं आएगी न? वह तो ठीक है कि आपकी वकालत है, वर्ना यदि आपको भी कारखाने में बैठाया होता तो?

प्रश्नकर्ता : नहीं दादा, बच्चों के कारखाने हैं लेकिन आपसे मिलने के बाद करखानों में क्या होता है और क्या करते हैं, वह मैं देखता ही नहीं।

दादाश्री : हमें वह देखना ही नहीं चाहिए।

प्रश्नकर्ता : बल्कि मैंने कहा 'दखलदांज़ी नहीं करूँगा। दादा ने बहुत समझाया है।'

दादाश्री : नहीं-नहीं, अगर गहराई में उतरे न तो बेटा तो चिंता करता है और फिर वापस बाप भी चिंता करता है। बेटा तो चिंता करता है अपने कारखाने में लेकिन पिता भी अगर उसमें उतरे तो बाप भी जानता है कि, 'साला इतना-इतना नुकसान होने लगा है।' तो सब के चिंता करने से क्या नुकसान खत्म हो जाएगा?

प्रश्नकर्ता : नहीं, नहीं...

दादाश्री : चिंता से ही सारा नुकसान होता है। चिंता से ही नुकसान होता है। चिंता करने का अधिकार नहीं है, सोचने का अधिकार है। सोचने का अधिकार है कि, 'भाई इतना! और वह विचार जब चिंता में बदल जाए तो फिर बंद कर देना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : विचार यदि चिंता में बदल जाए तो उस विचार को बंद कर देना चाहिए?

दादाश्री : हाँ, वह विचार अबव नॉर्मल विचार माना जाता है!

प्रश्नकर्ता : अबव नॉर्मल हो गया।

दादाश्री : हाँ, उसे चिंता कहा जाता है। अबव नॉर्मल विचार चिंता कहलाती है। अत: हम सोचते तो हैं लेकिन अगर वह अबव नॉर्मल होने लगे, अंदर परेशान करने लगे तो बंद कर देते हैं।

साल भर का हिसाब तो निकालो

पूरे साल का घाटा क्या एक दिन में हो जाता है? साल भर का बैलेन्स साल खत्म होने पर आता है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : तो रोज़ के नुकसान को क्यों गिनतो हो? आज नुकसान हुआ, तो परसों फायदा भी हो सकता है। अभी तो साल भर में कितने ही फायदा-नुकसान होंगे! इसलिए आज जो नुकसान

हुआ उसकी चिंता नहीं करनी है। चिंता कब करनी है? जब पूरे साल के बाद बैलेन्स शीट आए तब थोड़ी चिंता करना कि, 'भाई, अब अगले साल ऐसी भूल नहीं करनी है।' बाकी रोज़ क्यों चिंता करते हो, भाई! वह दुकान कभी भी चिंता नहीं करती, फिर तू किसलिए चिंता करता है? दुकान चिंता करती है क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तब क्या दुकान अपनी नहीं है? वाइफ से पूछकर देखना कि 'आप चिंता करती हो?' 'हम क्यों करें,' कहेगी। वे तो कहती हैं बल्कि इन्हें मना करती हैं कि, 'आप चिंता मत करना।' तब वे क्या कहता है? 'इसे समझ नहीं है।' यह आया बड़ा अक्ल का बोरा! और पत्नी कहेगी, 'चिंता मत करना।' मुझे भी हीरा बा कहते थे, कि 'अरे! ऐसा क्यों करते हैं? दिन भर, रात-दिन, एक-एक बजे तक काम पर रहते हैं!'

काम-धंधे का बोझ किस पर रखना है?

अब बोलो, इस काम धंधे का बोझ सिर पर रखना है या कहाँ? कहो। कहाँ रखना है काम-धंधे का बोझ?

प्रश्नकर्ता : वह पता नहीं है लेकिन सिर पर चढ़ ही जाता है।

दादाश्री : मैं आपको एक ही बात बताता हूँ कि एक बड़ा बिज़नेसमेन था, करोड़ो रुपिए का बिज़नेस था। अब सेठ इतना बुद्धिशाली कि वह हर छोटी-छोटी बात में गहराई में उतरता था! जब बुद्धि बढ़ जाती है तब यह गहराई में उतरता है और अगर बुद्धि कम हो तब सेक्रेटरी जो कुछ बताता है, वह सुनकर घर चला जाता है। बुद्धि ज़्यादा, इसलिए वह छोटी-छोटी बात में गहराई में उतरता है और गहराई में उतरने से सिर पर बोझ बढ़ता जाता है।

मैंने उसे एक उदाहरण दिया मैंने कहा, एक मियाँ के पास एक घोड़ा था। अब गरीब आदमी कैसा घोड़ा रखता है? टट्टू जैसा, अब घोड़े को खाने के लिए हरी घास चाहिए, तो वे मियाँ ऐसे नहीं थे कि खुद गट्ठर बांधकर लाते और खिला देते क्योंकि वे मोटे थे। वे मियाँ और बीबी सिर्फ दोनों ही थे, बच्चे नहीं थे। इसलिए फिर मियाँ क्या करते थे? खेत में ले जाते थे और वहाँ घोड़े को चराते और फिर उस पर बैठकर जाते थे क्योंकि मियाँ से चला नहीं जाता था! अब घोड़ा था टट्टू और मियाँ शरीर से भारी! घोड़े की पीठ ज़रा ऐसे झुक जाती थी तब फिर मियाँ वहाँ पर उतरकर उसे अच्छी तरह से खिलाते थे। अच्छी तरह से घोड़ा के खा लेने के बाद मियाँ वापस बैठकर धीरे-धीरे आ जाते थे।

अब बैठते समय मियाँ मन में सोचते थे कि यदि मैं बैठकर साँस लूँगा तो यह घोड़ा बैठ जाएगा इसलिए साँस थोड़ी धीरे से लेते थे। साँस रोककर बैठता था, मियाँ! इतने दयालु भाव से! अब वे मियाँ इस तरह से आ रहे थे और घोड़ा तो बेचारा घोड़ा, वह तो बंधा हुआ था इसलिए कोई चारा ही नहीं था न! मियाँ से थोड़े ही कुछ कह सकता था कि, 'उतरो यहाँ से।' ऐसे कैसे कह सकता था? तो जब ये मियाँ इसी तरह से आ रहे थे तब एक व्यक्ति वहाँ बैठा था, 'अरे खान साहब, इस घोड़े को कुछ घास खिलाओ। लो, यह मैं घास देता हूँ। यह ज्वार के हरे गट्ठर हैं, ये घोड़े को देना।' तब खान साहब कहने लगे कि 'मेरे पास पैसे-वैसे नहीं हैं।' तब वह कहने लगा कि 'मुझे पैसे-वैसे नहीं लेने हैं।' 'लो, एक गट्ठर आप ले जाओ और एक मैं ले जाता हूँ

अपने घर!' अब मियाँ तो ललचा गए कि यह तो बहुत अच्छी घास है! अब क्या करें? अब, मियाँ की अक्ल... तब फिर उसने अक्ल लगाई कि 'अगर इसे घोड़े पर रखूँगा तो घोड़ा बैठ जाएगा इसलिए लाओ अपने सिर पर ले लेता हूँ।' फिर मियाँ ने सिर पर रख लिया और वह तो घोड़ा के साथ चल पड़े फिर सामने कोई एक व्यक्ति मिला। वह कहने लगा, 'खान साहब, यह सिर पर क्यों रखा है? आपका चेहरा बिगड़ गया है! यह भार सिर पर क्यों रखा है?' तब कहने लगे 'घोड़े को भार नहीं लगे न! वह ठीक नहीं है न, इसलिए यह मैंने सिर पर ले लिया है।' तब वह कहने लगा, 'उसका वज़न तो घोड़े पर ही आ रहा है।' 'ऐसा! तो क्या करना चाहिए?' तब कहे, 'इधर रखो, घोड़े पर ही।' तब मियाँ समझ गए!

रखो संसार का भार संसार के घोड़े पर

उसी तरह यह संसार का भार जो है न, उसे संसार के घोड़े पर ही रखकर हमें बैठे रहना है। क्या हम मियाँ की तरह ऐसी भूलें करते हैं? नुकसान हो जाए तो संसार के घोड़े से कहना कि, 'यह नुकसान हुआ, अब यह गठरी हमने तेरे ऊपर रख दी। फायदा हो तब भी पोटली तुझ पर भाई! फायदा और नुकसान मैं अपने सिर पर नहीं लूँगा,' या लोगे? बोल नहीं रहे हो। सिर पर बोझ, यह बोझ क्यों हम पर? और बोझ लेने की कन्डिशन किसने रखी? यदि यहाँ की पार्लियामेन्ट में आप दो सौ साल का एक्सटेन्शन करवा लेतो हो, जैसे कोर्ट में तारीख बढ़ा लेते हैं, उसी तरह यदि इसकी भी दो सौ साल की मुद्दत बढ़ा लो तो कोई हर्ज़ नहीं है! समय बढ़ा सकोगे न? नहीं बढ़ती मुद्दत? तो फिर किसलिए? यह सब यों का यों ही रह जाएगा। अत: घोड़े पर रख देना। कहाँ रखोगे अब?

प्रश्नकर्ता : घोड़े पर।

दादाश्री : आप तय करना कि मुझे घोड़े पर ही रख देना है, तो घोड़े पर ही रखा जाएगा। आपके बोल के साथ ही यह सब हो जाएगा, क्योंकि अनंत शक्ति है अंदर! यह उदाहरण आपको समझ में आया न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, समझ में आया।

दादाश्री : लोग दुनिया को सिर पर ले लेते हैं।

प्रश्नकर्ता : सिर पर लेकर घूमते हैं।

फायदा-नुकसान व्यापार का, हमारा नहीं

दादाश्री : यदि कोई पूछे, 'इस साल आपको व्यापार में कोई नुकसान हुआ है? मैंने कहा, 'नहीं भाई, मुझे कोई नुकसान नहीं हुआ है, शायद व्यापार को नुकसान हुआ होगा और यदि फायदा हुआ, वह भी व्यापार में हुआ होगा। मैं कुछ फायदे-नुकसान में नहीं गया।' हम इसमें निमित्त है। मूल रूप से तो वह बिज़नेस था तो कमाया। अत: कौन कमाता है? वास्तव में व्यापार ही कमाता है और लोग तो आरोपण करते हैं कि 'मैंने कमाया।' ये सभी जो नुकसान होते हैं, वे नफे में से होते हैं या अपने पैसों में से जाते हैं?

प्रश्नकर्ता : नफे में से होता है।

दादाश्री : तो फिर यों ही बिना बात के नुकसान गिनते रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : गिनते हैं और ऐसा समझते जैसे खुद का नुकसान हो रहा हो।

दादाश्री : हाँ, ऐसा ही समझते हैं और फिर इसी सोचमें रहते हैं! नफे में से नुकसान

होता है, मूल धन में से नहीं होता लेकिन लोग नफे को ही मूल धन मानते हैं।

घर से क्या लेकर आए थे?

सस्ते ज़माने में अर्थात् उन दिनों के दस हज़ार अभी के बीस लाख जैसे थे। तो ऐसे ज़माने में दस एक हज़ार का काम साहब ने अस्वीकार कर दिया। तब हमारे भागीदार कहने लगे, 'अरे भाई यह तो दस हज़ार रुपए का पानी कर दिया' बहुत डिप्रेस हो गए। मैंने कहा, 'ऐसा क्यों कर रहे हो? हम घर से जो लेकर आए थे, उसमें से कुछ गया है क्या? कुछ बचा है या नहीं?' 'नहीं, वह तो बहुत सारा है।' तब मैंने कहा, 'छोड़ो न! भाई, इसमें बहुत है, तो उसमें से कम कर देना। घर से लेकर क्या आए थे? बेकार ही!

प्रश्नकर्ता : इतना आपने अच्छा कहा। वर्ना आप तो ऐसा कहते कि, 'जन्मे, तब क्या लेकर आए थे।'

दादाश्री : नहीं, वह बात अलग है। जब हम मुंबई आए तब घर से क्या लेकर आए थे? बिना बात के डिप्रेस होने की क्या ज़रूरत है? 'जन्म से क्या लेकर आया था,' ऐसा कहना गलत है। उसके बाद तो पत्नी, बच्चे वगैर सब होता है। वह फिर अलग भाषा है लेकिन ऐसी भाषा तो हम बोल सकते हैं कि 'भाई, हम मुंबई में क्या लेकर आए थे और क्या लेकर जाएँगे?'

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने जो बात की थी कि व्यापार में जो फायदा हुआ था, उसी में से नुकसान हुआ न! लेकिन वह तो ऐसा कहता है कि, 'ऐसा सिर्फ कह ही रहे हो। आपको ऐसा लगता है। वास्तव में जब ऐसा होता है, तब पता चलता है।' मैंने कहा, 'पॉज़िटिव रहने में क्या हर्ज़ है?'

दादाश्री : नहीं, सिर्फ पॉज़िटिव ही नहीं, हमारे भागीदार को तुरंत ही संतोष हो गया, चेहरा बदल गया। कहने लगा, 'हाँ, कुछ लाए ही नहीं। हमारे पास तो यह है ही। तब मैंने कहा, 'यह जो है इसमें से इतने घटा दो न।' कहने लगे, 'बहुत है।' 'तब फिर छोड़ो न, व्यर्थ में!'

जितना खर्च हुआ, उतना अपना, बाकी सब पराया

यदि इसे साथ में ले जाना हो, तब कहना, 'तब तो पाई-पाई संभालेंगे' साथ में ले जाओगे? हमारे गाँव में से कोई भी नहीं ले गया, मैंने सभी को देखा है। मुझे लगता है आपके मुहल्ले वाले ले गए होंगे।

प्रश्नकर्ता : पता नहीं, वे वापस बताने नहीं आते।

दादाश्री : तब क्या करना है? कुछ नहीं, यों ही हाय-हाय बिना बात के! मुझे एक पटेल मिला था, यह ज्ञान लेने के बाद तो वह समझदार हो गया है। जब लाख चले जाते हैं, उस दिन वह पाँच-सात हज़ार रुपए खर्च कर आता है। नहीं? करता है न, पाँच-सात हज़ार का खर्चा?

प्रश्नकर्ता : हाँ दादा। अंदर से (जेब से) दस हज़ार निकल जाते हैं।

दादाश्री : 'यह ज्ञान मिलने के बाद आनंद में रहना सीख गया' कहता है, 'जिस दिन जाएँ तभी। जब नहीं जाते हैं तब क्या खर्च करना?' कहता है, 'जब जाते हैं तभी खर्च करने में मज़ा आता है!' उसकी पॉज़िटिवनेस है। नेगेटिव में तो, 'मैं विधवा हो गई।' अरे! जानते नहीं थे। शादी करने बैठे तभी से कि यह जाएगा। कोई तो पहले जाएगा? क्या शादी करते समय नहीं

जानते थे? ऐसा ज्ञान नहीं था? 'मैं विधवा हो गई।' लो, जैसे सबकुछ चला गया हो। कल था और आज चला जाता है लेकिन क्या कहते हैं? मुझे देखना तक अच्छा नहीं लगता लेकिन क्या करें? साथ में तो रहना ही पड़ेगा न! और जब नहीं रहें तब कहती है 'मैं विधवा हो गई।' ऐसा है यह सारा संसार! बिना बात के हाय-हाय, हाय-हाय!

क्या साथ में कुछ ले जाना है? बगैर गलती की पीड़ा है यह सारी! जब समुद्र में ज्वार आता है तब मुंबई में दस फुट ऊँचा चढ़ता है और खंभात मैं बाईस फुट चढ़ता है, उसमें खुश होने जैसा नहीं है, वापस बाईस फुट उतरेगा भी सही।

प्रश्नकर्ता : हाँ, उतरता ही है वह।

दादाश्री : यहाँ पर तो दस फुट ही उतरेगा इसलिए खुश होने जैसा नहीं है यह सब। चढ़ना-उतरना, चढ़ना-उतरना एक समान, ईक्वल और ऑपोज़िट ही होता है। कैसा होता है?

प्रश्नकर्ता : ऑपोज़िट होता है।

दादाश्री : जितना अच्छे रास्ते पर खर्च हुआ उतना अपना, बाकी सब पराया।

फायदा या नुकसान, दोनों पर रखो समदृष्टि

इस दुनिया में अगर व्यापारियों के वहाँ यदि सब से बड़ा उत्सव है तो वह है नुकसान। फायदे के लिए नुकसान। नुकसान होगा तभी फायदा होगा।

व्यापार के दो बच्चे! एक का नाम नुकासान और एक का नाम फायदा। नुकसान वाला बेटा किसी को भी अच्छा नहीं लगता लेकिन होते दो ही है वे तो, दो का जन्म होता है।

बेटे पर पक्षपात नहीं रखना। फायदे पर भी पक्षपात नहीं रखना और नुकसान पर भी बिल्कुल पक्षपात नहीं रखना चाहिए। दोनों को समान दृष्टि से देखना चाहिए। यदि सौतेला हो तो शायद दृष्टि बदल सकती है लेकिन इन्हें हमें समान दृष्टि से देखना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हम तो बिल्कुल उल्टी ही दृष्टि रखते हैं, एक पर ही पक्षपात। जहाँ फायदा हो, उसी तरफ ध्यान रखते हैं।

दादाश्री : नहीं, लेकिन मेरा कहना यह है कि इससे पूरी रात सोते नहीं हो। घर में क्लेश और किस्मत में लिखा हुआ नुकसान तो छोड़ेगा नहीं। अत: मैंने आपको व्यवस्थित का ज्ञान दिया है न, व्यवस्थित का ज्ञान नहीं दिया?

प्रश्नकर्ता : दिया है।

दादाश्री : लेकिन यह बुद्धि संसार से बाहर नहीं निकलने देती। जहाँ देखो वहाँ फायदा और नुकसान दिखाती है। प्रॉफिट एन्ड लॉस, प्रॉफिट एन्ड लॉस। अरे भाई, मुझे प्रॉफिट भी नहीं चाहिए और नुकसान भी नहीं चाहिए। तब मुझ से कहता है, 'आप क्या पसंद करोंगे? प्रॉफिट एन्ड लॉस में से?' मैंने कहा, 'भाई, नुकसान!' जिस चीज़ को कोई भी पसंद नहीं करता, वह मेरी पसंद है। नुकसान! पसंद करने से भी कुछ भी बदल नहीं जाएगा। नुकसान होने पर भी किस्मत में लिखा फायदा कहीं जाएगा नहीं, तो उसके बजाय नुकसान को ही पसंद कर लोगे तो उसमें क्या गलत है? लोग नुकसान को पसंद नहीं करते। 'ऐसा मत कहो, नुकसान की तो बात ही मत करो...' अरे, कहने से थोड़े ही हो जाएगा? और यदि होना होगा तो छोड़ेगा नहीं। अर्थात् कहकर निडर हो जाएँ, निडर होकर घूमें।

यों करनी है तैयारी व्यापार में

तब मुझ से पूछा, 'अगर आप कोई व्यापार करते हैं तब क्या करते हैं? मैंने कहा, 'देखो, हम जब नया स्टीमर बनाकर समुद्र में छोड़ते हैं और जब उस स्टीमर को तैरने के लिए समुद्र में छोड़ते हैं तब उस दिन हम वहाँ सत्यनारायण की कथा करवाते हैं, पूजा करवाते हैं, स्टीमर में ही सबकुछ करवाते हैं। सभी लोगों को खाना खिलाते हैं। फिर मैं अकेले में स्टीमर के कान में कह देता हूँ, 'जब तुझे डूबना हो तब डूबना, हमारी इच्छा नहीं है।' ऐसा कह देते हैं फिर, हं... 'जब तुझे डूबना हो तब डूबना,' यदि ये लोग ऐसा कहें तो वे समझेंगे कि 'ये निस्पृह हो गए हैं। अब हमें क्या लेना देना?' मैं कहता हूँ कि, 'हमारी इच्छा नहीं है भाई।' यदि हमने कह रखा हो कि जब डूबना हो तो डूबना। यदि वह डूब जाए तो हम जान जाएँगे कि हमने कहा था और नहीं डूबे तो फायदा ही है न।

यानी एडजस्टमेन्ट सेट करने से ही किनारा अंत आएगा इस दुनिया का।

नुकसान के उपासक को नुकसान कहाँ से?

हमने भी पूरी ज़िंदगी कॉन्ट्रैक्ट का काम किया है और सभी तरह के कॉन्ट्रैक्ट किए हैं। समुद्र में जेटियाँ भी बनाई हैं। अब, वहाँ पर शुरुआत में क्या करता था? जहाँ पाँच लाख का फायदा मिलना हो वहाँ पहले से ही तय कर देता था कि लाख रुपए मिल जाएँ तो ठीक है। अंत में अगर बराबर हो जाए और इन्कम टैक्स निकल जाए और अपना खाने-पीने का खर्च निकल जाए तो बहुत हो गया। जब तीन लाख मिलते थे तो मन में आनंद रहता था, क्योंकि जितना सोचा था उससे ज़्यादा मिले। लोग तो चालीस हज़ार मानते हैं और बीस हज़ार मिलें तो दुःखी हो जाते हैं! देखो, तरीका ही गलत है न! जीवन जीने का तरीका ही गलत है न! और यदि पहले से ही नुकसान हैं, ऐसा तय कर ले तो उसके जैसा सुखिया कोई भी नहीं है। फिर ज़िंदगी में कभी नुकसान ही नहीं होगा क्योंकि जो ऐसा कहे कि मैं नुकसान का ही उपासक हूँ तो फिर ज़िंदगी भर कभी नुकसान होगा ही नहीं। नुकसान का उपासक बन गया तो फिर क्या?

नुकसान के उपासक को ज़िंदगी में कभी भी नुकसान नहीं होता। इस संसार में जो फायदा चाहते हैं उन्हीं को नुकसान होता है और नुकसान वाले को तो फायदा ही है।

देखो नुकसान के सपने

अब कौन व्यक्ति नुकसान के सपने देखता होगा?

प्रश्नकर्ता : नुकसान का तो कोई भी नहीं।

दादाश्री : तब मैंने कहा कि नुकसान के सपने देख, भाई। 'नुकसान' हो ऐसा कहना। आने वाला रोल तो डिसाइड हो चुका है। अरे! तू क्यों ऐसा कहता रहता है? किसी को हिम्मत तो आए न, बेचारे को! अगर हम कहे कि 'नुकसान हो' तो फिर वह भी सोचेगा कि 'मैं भी ऐसा कहूँगा!' बहुत अच्छा भाई! यह सब सिखाने के लिए बता रहा हूँ। ऐसा सिखना चाहता हूँ। रोल तो पूरा तय हो चुका है, तो फिर ऐसी हिम्मत तो रख ज़रा! व्यर्थ ही गाता रहता है, 'फायदा, फायदा, फायदा!' तू फायदे का गाता रहेगा फिर भी नुकसान तो होकर ही रहेगा। यदि कोई पूछे कि 'आपको नुकसान प्रिय है?' तब कहना, 'नहीं भाई।' भगवान के दोनों ही बच्चे, फायदा और नुकसान हमारे लिए एक समान ही

है। कोई अप्रिय नहीं और कोई प्यारा भी नहीं। जिस समय जो भी आएगा उसे खिलाएँगे हम। वास्तव में अंत में तो समता ही रखनी पड़ेगी न! तब भाई, पहले से ही रख न! लोग तो नकल ही करते रहते हैं हमें शुरू से ही आदत नहीं है नकल करने की।

प्रश्नकर्ता : ऐसा क्यों दादा? वह किसलिए?

दादाश्री : मुझे ऐसा लगा था कि यह संसार अंधा है, सत्य नहीं है। खुद की बुद्धि से नहीं चलता, लोगों की बुद्धि से चलता है।

सभी मुनाफे की ही उम्मीद रखते हैं। कोई भी घाटे की उम्मीद ही नहीं रखता। एक साल तो घाटे की उम्मीद रखकर चल। घाटा आए तो समझना उम्मीद फली। हम तो घाटे की उम्मीद रखते हैं, सभी की तरह नहीं रखते।

पूरी दुनिया घाटे की निंदा करती है। उसमें घाटे ने क्या बिगाड़ा है? भगवान से पूछा जाए कि, 'साहब, आपको नफा या नुकसान नहीं है?' तब भगवान बताते हैं कि, 'तू भ्रांति ज्ञान से देखता है, 'रिलेटिव' देखता है इसलिए नफा-नुकसान दिखाई देते हैं। मैं यथार्थ ज्ञान से देखता हूँ।'

कितना फायदा मानना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : दादा, आप्तवाणी में अच्छा कहा है कि, 'आप जब व्यापार शुरू करो और उसे पहले से ही स्वीकार कर लेना कि नुकसान हो जाए तो कोई हर्ज़ नहीं और मान लो कि यदि नुकसान हो जाए तो, 'भाई, हमारा नुकसान होना तय था तो हो गया।'

दादाश्री : हाँ। व्यवहार में तो झूठी आशा नहीं रखना। फायदा होगा या नुकसान होगा, ऐसी सारी आशाएँ झूठी रखते हैं न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, हाँ।

दादाश्री : हमारे एक भागीदार ऐसे थे, जो बिल्कुल ही संसार के लोगों जैसे, पद्धतिबद्ध। जिस तरह संसार के लोग चलते हैं न, उसी तरह से धर्म करते थे, धर्म का सबकुछ करते थे। वे कोई भी कॉन्ट्रैक्ट लेते और वह आ जाता था तो बहुत खुश हो जाते थे। तब मुझ से कहते थे, 'दो-एक लाख मिलेंगे।' मैंने कहा, 'ऐसा कह रहो हो और अगर दो लाख का नुकसान हो जाएगा तब क्या करोगे? तब कहने लगे, 'अभी से ऐसा मत कहो।' मैंने कहा, 'मेरी इच्छा नहीं है, क्या भागीदार के रूप में मेरी इच्छा थोड़ी ही हो सकती है नुकसान करने की? लेकिन आप अभी से यह क्या सोचने लगे? तब मुझ से कहने लगे कि 'कितना मानूँ?' मैंने कहा, 'हमने दो लाख लगाए हैं तो उसका ब्याज प्लस कुछ हमारे मेन्टनेन्स के, अपने खुद के। अर्थात् तीस एक हज़ार मानो न।' 'तो फिर इन्कम टैक्स वाले का क्या?' मैंने कहा, 'इन्कम टैक्स तो, यदि ज़्यादा कमाएँगे तभी देना है न! तीस मानो न!' तो कहा, 'अच्छा, तीस मानकर चलते हैं' और फिर काम खत्म होने के बाद जब अंत में बिल आया तब मुझ से कहने लगे, 'हमने माने थे तीस लेकिन मिले लाख।' तब मैंने कहा, 'कितने ज़्यादा मिले?' तब कहने लगा, 'सत्तर हज़ार।' तब मैंने कहा, 'यदि आपके माने अनुसार किया होता तो?' तब कहने लगा, 'एक लाख का नुकसान होता।' कितना नुकसान होता?

प्रश्नकर्ता : एक लाख का।

दादाश्री : तो ऐसा कुछ मानो कि हर साल फायदा ही मिले। झूठी-झूठी धारनाएँ बढ़ाकर फिर ऐसा कहेंगे कि, 'यह ज़्यादा खर्च हो गया,

फलाँ हो गया, ऐसा हो गया, वैसा हो गया', फिर नुकसान हो जाए तो हमेशा के लिए कलह। उसको कभी फायदा ही नहीं होता था, जबकि मुझे तो हर साल फायदा होता था।

यह तो, तय करता है कि, 'एक लाख मिलेंगे' और फिर यदि सत्तर हज़ार मिलें तब कहता है, 'तीस हज़ार का नुकसान हो गया।' यह तो कभी कमाता ही नहीं है न! जब देखो तब विधुर (कंगाल) ही। पत्नी होते हुए भी विधुर। पत्नी के बगैर शादीशुदा(खुश) होना चाहिए, उसके बजाय पत्नी होते हुए भी विधुर हो जाता है। देखो, यह उल्टी समझ है न! इसलिए मैं कहता हूँ, 'काम करूँगा तो दस एक हज़ार मिल सकते हैं। ऐसा लगे कि लाख मिलेंगे तब तय करना कि दस एक हज़ार मिलेंगे। तो वह हमारे लिए प्रॉफिटेबल है। आफ्टर ऑल देअर इज़ ए प्रॉफिट। आफ्टर ऑल बोलना। आफ्टर ऑल का क्या अर्थ है?

प्रश्नकर्ता : आखिरकार प्रॉफिट।

दादाश्री : आखिरकार प्रॉफिट तो है ही।

प्रश्नकर्ता : और दस हज़ार से ज़्यादा!

दादाश्री : हा, और फिर जब चालीस हज़ार आए न, तब तो हमें कहना है कि 'देखो, दस हज़ार बढ़े न! चलो अब नाश्ता-पानी, चाय-पानी पिलाएँगे!

प्रश्नकर्ता : दादा, वह तो संतुष्ट रहने के लिए है।

दादाश्री : नहीं, यह बुद्धिपूर्वक का है। इसमें सुखी कैसे रहें बुद्धि से उसका रास्ता ढूँढ निकालना चाहिए। यह बुद्धिपूर्वक की व्यवस्था है। बुद्धि है नहीं और बेकार ही ये खाली बोरे चार-चार आने में बिकते हैं! इस तरह मेल बैठाना नहीं आता न।

सयाना वाला एडजस्टमेन्ट

लाभ को देखना, वीतराग विज्ञान कहलाता है और नुकसान को देखना, वह संसार में भटकने का ज्ञान!

अत: हम हर एक बात में पहले हिसाब निकाल लेते हैं तब फिर नुकसान होता ही नहीं! लोग व्यापार में तय करते हैं, 'इस साल तो लगभग पचास हज़ार डॉलर तो मिलेंगे ही' कहेंगे। तब उसी काम के लिए हम क्या कहते हैं? नहीं, खाते-पीते पाँच हज़ार मिलेंगे हमें। अब अगर पचास हज़ार वाले के दस हज़ारे कम हो जाएँ तो कहेगा 'दस हज़ार का नुकसान हो गया।' 'अरे भाई, नुकसान कहाँ हुआ? चालीस का तो फायदा हुआ न!' हमने क्या किया? पाँच सोचा और तीस आ मिलें तो, 'देखो पच्चीस ज़्यादा मिले!' सेटिंग अपनी। एडजस्टमेन्ट ऐसा होना चाहिए कि हमारा यह जो मन है न, वह उछल-कूद न करे। मन हमें परेशान न करे। मन परेशान करता है तब वह बेहाल कर देता है। उसके हाथ में लगाम सौंप देंगे तो वह नचाएगा, तो फिर लगाम ही क्यों सौंपें? तो हमारा पूरा एडजस्टमेन्ट बहुत समझदारी वाला होता है। यदि आप इन टेप को सुनेंगे तो आपके काम आएँगी, यह हेल्पफुल होगा।

यह तो मैं कितने ही जन्मों से ट्रायल कर के ही लाया हूँ। तभी तो मैं आपसे ये सारी अनुभवों की बातें कर सकता हूँ। और तभी खुलासा होगा न! यदि खुलासा नहीं होता तो इंसान उलझन में पड़ जाता है।

- जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

15-17 फरवरी : राजकोट में पूज्यश्री के सत्संग व ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस बार नए क्षेत्र में कार्यक्रम का आयोजन रखा गया। पहले दिन प्रश्नोत्तरी सत्संग के बाद आयोजित ज्ञानविधि में 1455 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। पूज्यश्री 14 फरवरी को राजकोट त्रिमंदिर में दर्शन के लिए गए और सेवार्थियों से मिलकर व्यक्तिगत मार्गदर्शन दिया।

18-20 फरवरी : जूनागढ़ में सौराष्ट्र के महात्माओं के लिए रखे गए ज़ोनल शिविर में जाते समय पूज्यश्री प्रसिद्ध खोडलधाम मंदिर में दर्शन के लिए गए। मंदिर के व्यवस्थापकों ने पूज्यश्री का सम्मान किया और इस कैम्पस और काम के बारे में जानकारी दी। उसके बाद पूज्यश्री ने गोंडल के नए सेन्टर को देखा और स्थानीय महात्माओं को दर्शन दिए। जूनागढ़ में पूज्यश्री का स्वागत, भक्त नरसिंह मेहता जैसी टोपी पहनकर और करताल से किया गया। बग़्घी में बैठाकर यजमान महात्माओं के घर तक शोभायात्रा निकाली गई। शिविर में पूज्यश्री द्वारा 'अपमान के सामने ज्ञान का पुरुषार्थ' और 'सामायिक की विविध प्रकार की समझ' टॉपिक पर विशेष सत्संग हुए। पूज्यश्री की निश्रा में गिरनार तलहटी में आए 'रूपायतन' के नैसर्गिक वातावरण में इन्फॉर्मल सत्संग हुआ। रात के सेशन में गरबा, GNC के बच्चों द्वारा कल्चरल प्रॉग्राम हुए। अंतिम सेशन में महात्माओं ने सेन्टर वाइज़ पूज्यश्री के दर्शन किए।

22-25 फरवरी : सौराष्ट्र की धरती पर जामनगर में पाँचवे त्रिमंदिर निर्माण हुआ। इस त्रिमंदिर का प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव 24 फरवरी को रखा गया। उससे पहले 22 फरवरी को प्रश्नोत्तरी सत्संग और 23 फरवरी ज्ञानविधि का आयोजन हुआ। ज्ञानविधि में 1500 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। प्राणप्रतिष्ठा के दिन सुबह 10 बजे देवी-देवताओं का आव्हान कर रहे पद से, प्रतिष्ठा का शुभारंभ हुआ। पूज्यश्री ने दो घंटे तक स्थापित प्रतिमाओं की प्रतष्ठिा विधि की। महात्माओं ने उस दौरान सीमंधर स्वामी को 108 बार नमस्कार और असीम जय जयकार किए। उसके बाद, मंदिर पर ध्वजारोहण किया गया और प्राणप्रतिष्ठा पर एक पद गाया गया। दोपहर ब्रेक के बाद, महात्माओं को चार चरणों में मंदिर में प्रक्षाल-पूजन-आरती का लाभ प्राप्त हुआ। रात में विशेष भक्ति का आयोजन किया गया। दूसरे दिन सुबह 8-45 बजे पूज्यश्री द्वारा मंदिर के द्वार खोले गए और दर्शनार्थियों के लिए मंदिर खोल दिया गया। स्वामी व दादा की आरती हुई। 10,000 से ज़्यादा महात्माओं ने महोत्सव का आनंद उठाया। बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों ने दर्शन का लाभ प्राप्त किया।

7-11 मार्च : सैफ्रोनी (मेहसाणा) में अर्धवार्षिक अविवाहित युवा भाईओं के लिए, ब्रह्मचर्य शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें 450 युवकों ने हिस्सा लिया। ब्रह्मचर्य (पू) पुस्तक पर पारायण के अलावा 'उपराणा' टॉपिक पर विशेष सत्संग हुआ । सूरत सेन्टर के युवकों ने 'उपराणा' टॉपिक पर बहुत अच्छा नाटक पेश किया। पूज्यश्री के साथ डिनर, मॉर्निंग वॉक, गरबा भक्ति के अलावा 'दादा दरबार' के अंतर्गत साधकों को पूज्यश्री ने व्यक्तिगत मार्गदर्शन के रूप में आशीर्वचन कहे। आप्तपुत्रों द्वारा स्पेशल सेशन, स्पेशल टॉपिक आधारित जनरल ग्रुप डिस्कशन और व्यक्तिगत मार्गदर्शन के लिए पर्सनल डिस्कशन भी हुए। कई साधकों ने प्रश्नोंत्तरी के दौरान सब के सामने अपने दोषों की आलोचना की। विशेष साधना करते हुए साधकों के लिए पूज्यश्री का स्पेशल सेशन आयोजित हुआ।

13-17 मार्च : सैफ्रोनी (मेहसाणा) में 470 आविवाहित बहनों की पूज्यश्री के साथ अर्धवार्षिक ब्रह्मचर्य शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें ब्रह्मचर्य (पू.) पुस्तक पर पारायण और 'उपराणा' स्पेशल टॉपिक सहित, पूज्यश्री के साथ गरबा, डिनर और इन्फॉर्मल सेशन के कार्यक्रम हुए। विशेष में पूज्यश्री के साथ दो छोटे ग्रुप में, विशेष सत्संग और 'दादा दरबार' का आयोजन हुआ, जिसमें साधक बहनों ने अपने पुरुषार्थ के लिए विशेष चाबियाँ प्राप्त की। इसके अलावा आप्तपुत्री बहनों के साथ सत्संग, इन्फॉर्मल तथा पर्सनल डिस्कशन भी हुए।

भारत में पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर सोम से शनि रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन'-चंदना** पर सोम और शुक्र रात 7-30 से 8 (कन्नड़ में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9 (गुजराती में)

USA-Canada
- **'SAB-US'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST
- **'Rishtey-USA'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 (हिन्दी में) EST
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
- **'SAB-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 - Western European Time (6.30am-7am GMT)
- **'Rishtey-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6am-6-30am GMT)
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

Singapore
- **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (हिन्दी में)

Australia
- **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 11-30 से 12 (हिन्दी में)

New Zealand
- **'SAB- International'** पर हर रोज़ दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE **Rishtey-Asia'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 (हिन्दी में) EST

USA-UK-Africa-Aus. **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345#. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. 3 पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं, पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेइल आइडी पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

Pujya Deepakbhai's Canada-USA Satsang Schedule 2019

Contact no. for all centers in USA : 1-877-505-DADA (3232) & email for USA - info@us.dadabhagwan.org

Date	Day	City	Session Title	From	To	Venue	Contact No. & E-mail
21 Jun	Fri	Montreal, Canada	Aptaputra Satsang	7-00 PM	9-00 PM	Hampton Inn & Suites 1900 Trans Canada Hwy Dorval Quebec, H9P 2N4	Extn. 1025 wcmontreal@ ca.dadabhagwan.org
21 Jun	Fri	Toronto, Canada	Mahatma Only Satsang	6-30 PM	9-30 PM	Sringeri Vidya Bharati Foundation 80 Brydon Dr. Etobicoke, ON, M9W 4N6	Extn. 1006 wctoronto@ ca.dadabhagwan.org
22 Jun	Sat		Satsang	5-00 PM	8-00 PM		
23 Jun	Sun		Aptaputra Satsang	10-30 AM	12-30 PM		
23 Jun	Sun		Gnan Vidhi	4-00 PM	8-00 PM		
30 Jun	Sun	Savannah, GA	Aptaputra Satsang	5-00 PM	7-00 PM	Savannah Sanatan Temple 2006 Fort Argyle Road Bloomingdale, GA 31302	Extn. 1038 atul@comcast.net
1 Jul	Mon	Tallahassee, FL	Satsang	6-30 PM	9-30 PM	Lawton Chiles High School - Auditorium 7200 Lawton Chiles Lane Tallahassee, FL 32312	Extn. 1037 wctallahasee@ us.dadabhagwan.org
2 Jul	Tue		Aptaputra Satsang	10-30 AM	12-30 PM		
2 Jul	Tue		Gnan Vidhi	5-00 PM	9-00 PM		
8 Jul	Mon	Des Moines, IA	Satsang	6-30 PM	9-30 PM	Johnston Middle School - Auditorium 6501 NW 62nd Avenue Johnston, IA 50131	Extn. 1036 wciowa@ us.dadabhagwan.org
9 Jul	Tue		Aptaputra Satsang	10-30 AM	12-30 PM		
9 Jul	Tue		Gnan Vidhi	5-00 PM	9-00 PM		
12 Jul	Fri	Houston, TX	Opening Ceremony & Satsang	10-00 AM	12-30 PM	Hilton Americas-Houston 1600 Lamar Street Houston, TX 77010	Extn. 10 gp@ us.dadabhagwan.org
12 Jul	Fri	Houston, TX	GP Shibir	4-30 PM	7-00 PM		
13 Jul	Sat	Houston, TX	GP Shibir	10-00 AM	12-30 PM		
13 Jul	Sat	Houston, TX	Gnan Vidhi	5-00 PM	7-30 PM		
14 Jul	Sun	Houston, TX	Shobha Yatra	8-00 AM	9-30 PM		
14 Jul	Sun	Houston, TX	Pran Pratishtha	10-00 AM	12-30 PM		
14 Jul	Sun	Houston, TX	GP Shibir	4-30 PM	7-00 PM		
15 Jul	Mon	Houston, TX	GP Shibir	10-00 AM	12-30 PM		
15 Jul	Mon	Houston, TX	Aptaputra Satsang	4-30 PM	7-00 PM		
16 Jul	Tue	Houston, TX	GP Day	8-00 AM	12-30 PM		
16 Jul	Tue	Houston, TX	GP Day	4-30 PM	7-00 PM		
17 Jul	Wed	Houston, TX	GP Shibir - Closing Ceremony	10-00 AM	11-30 PM		
20 Jul	Sat	Chicago, IL	Satsang	5-00 PM	8-00 PM	Sheraton Lisle Naperville 3000 Warrenville Road Lisle, IL 60532	Extn. 1005 wcchicago@ us.dadabhagwan.org
21 Jul	Sun		Aptaputra Satsang	10-30 AM	12-30 PM		
21 Jul	Sun		Gnan Vidhi	5-00 PM	9-00 PM		
22 Jul	Mon		Mahatma Only Satsang	6-00 PM	9-00 PM		
27 Jul	Sat	Los Angeles, CA	Satsang	5-00 PM	8-00 PM	Sanatan Dharma Temple 15311 Pioneer Blvd. Los Angeles, CA 90650	Extn. 1009 wclosangeles@ us.dadabhagwan.org
28 Jul	Sun		Aptaputra Satsang	10-30 AM	12-30 PM		
28 Jul	Sun		Gnan Vidhi	4-30 PM	8-30 PM		

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557, **जामनगर :** 9924343687 **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद:** (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830080820

यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

अडालज त्रिमंदिर में हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष 2019

8 मई (बुध)	सुबह 10-30 से 12	**प्रतिक्रमण - पारायण**	शाम 5 से 6-30	**प्रतिक्रमण - पारायण**
9 मई (गुरु)	सुबह 8 से 9	**किर्तन भक्ति** (पूज्यश्री की अखंड तंदुरस्ती और लंबी आयु के लिए)		
	सुबह 10-30 से 12	**टोपिक - उपराणा**	शाम 5 से 6-30	**टोपिक - उपराणा**
	रात 8 से 10	**पूज्यश्री के जन्मदिन के अवसर पर विशेष कार्यक्रम**		
10 मई (शुक्र)	सुबह 10-30 से 12	**पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार - सत्संग**		
	शाम 8 से 10	**श्री सीमंधर स्वामी की प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा**		
11 मई (शनि)	सुबह 10-30 से 12	**जनरल सत्संग**	शाम 4-30 से 8	**ज्ञानविधि**
12 मई (रवि)	सुबह 10-30 से 12	**शिविरार्थीओं के लिए दर्शन**	शाम 5 से 6-30	**पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार**

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। निम्नलिखित सत्संग केन्द्रों में से अपने नज़दीकी सत्संग केन्द्र पर अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते है और यदि आपके नज़दीक में कोई सत्संग केन्द्र नहीं है, तो अडालज मुख्य सत्संग केन्द्र के रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 079-39830400 पर (सुबह 9-30 से 1 और दोपहर 3 से 6) अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते है। रजिस्ट्रेशन कराने के बाद यदि आप किसी कारणवश नहीं आनेवाले हो, तो अपना रजिस्ट्रेशन 24 अप्रैल 2019 तक केन्सल करवाना न भूलें।

दिल्ली	: 9810098564	**भुवनेश्वर**	: 8763073111	**नागपुर**	: 9970059233
जलंधर	: 9814063043	**रायपुर**	: 9329644433	**जलगाँव**	: 9420942944
वाराणसी	: 9795228541	**भिलाई**	: 9407982704	**मुंबई**	: 9821996663
जयपुर	: 8290333699	**इन्दौर**	: 6354602400	**पूणे**	: 7218473468
पाली	: 9461251542	**भोपाल**	: 6354602399	**हैद्राबाद**	: 9885058771
पटना	: 7352723132	**जबलपुर**	: 9425160428	**बंगलूर**	: 9590979099
मुजफ्फरपुर	: 7209956892	**औरंगाबाद**	: 8308008897	**हुबली**	: 9513216111
कोलकता	: 9830080820	**अमरावती**	: 9422915064	**चेन्नई**	: 7200740000

अडालज में अविवाहित युवकों के लिए हिन्दी में ब्रह्मचर्य शिविर - दि. 13-14 मई 2019

जो युवक इस ब्रह्मचर्य शिविर में भाग लेना चाहते है, उसकी उम्र 21 से 30 के बीच और आत्मज्ञान लिए कम से कम 1 साल हुआ होना जरूरी है। कृपया अधिक जानकारी और रजिस्ट्रेशन के लिए MBA office 9924343150 / 9924307773 पर संपर्क करें।

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

सुरत

18 मई (शनि) रात 8 से 11 - **सत्संग** तथा **19 मई** (रवि) शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

स्थल : इन्डोर स्टेडियम, लोर्डस कोन्वेन्ट स्कूल के सामने, मेघदूत सोसायटी के पास, अठवालाईन्स. **संपर्क :** 9574008007

20 मई (सोम) रात 8 से 11 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : गांधी स्मृति भवन, टीमलीयावाड रोड, महावीर होस्पीटल के पीछे, नानपुरा, सुरत. **संपर्क :** 9574008007

वडोदरा

27 मई (सोम) शाम 7-30 से 10-30 - **सत्संग** तथा **28 मई** (मंगल) शाम 7 से 10-30 - **ज्ञानविधि**

29 मई (बुध) शाम 7-30 से 10-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : अकोटा स्टेडियम, अकोटा, वडोदरा. **संपर्क :** 9924343335

PMHT (पेरेन्ट्स महात्मा) शिविर

5 से 9 जून (बुध - रवि) - **सत्संग समय की घोषणा बाकी**

सूचना : 1) यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है। 2) शिविर में भाग लेने के लिए अपने नज़दिकी सेन्टर में और अगर नज़दिक में कोई सेन्टर नहीं है, तो अडालज त्रिमंदिर के रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. (079) 39830400 (सुबह 9-30 से 12 तथा दोपहर 3 से 6) पर दि.19 मई 2019 तक अपना रजिस्ट्रेशन करवाएँ।

अप्रैल 2019
वर्ष-14 अंक-6
अखंड क्रमांक - 162

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/36/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

नफा व नुकसान, सत्ता किसकी?

यह कोई और करवा रहा है और आपके मन में भ्रांति है कि 'मैं कर रहा हू'। नफा व नुकसान व्यवस्थित के हाथ में है। अत: व्यवस्थित भीतर जो प्रेरणा करे न, हमें उस अनुसार करना चाहिए। और ज़्यादा कुछ अक्ल नहीं लड़ानी है। अगर बुद्धि से नापने जाएँ कि नफा होगा या नुकसान तो क्या वह पता चलेगा? नहीं चलेगा। यह नफा या नुकसान ऐसा कुछ नहीं देखना है। तो अब देखना क्या है? यह नफा-नुकसान तो सारा करके आए हुए हो। अब इसमें कुछ भाव डालो या ऐसा कुछ करो कि यहाँ सत्संग में रहना है। नफा व नुकसान में तो निमित्त के तौर पर, हमें भीतर से जो प्रेरणा मिले उस अनुसार चलते रहना है। 'व्यवस्थित ' को पार नहीं करना है।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.